## About the Book

यह पुस्तक मध्य प्रदेश पुलिस कॉन्स्टेबल (जनरल ड्यूटी / चालक / ट्रेडमैन) परीक्षा की तैयारी करने वाले अभ्यर्थियों के लिए तैयार की गई है। यह नवीनतम परीक्षा पैटर्न के अनुसार तैयारी में मदद करती है और अभ्यर्थियों को बेहतर अभ्यास, प्रश्न हल करने और परीक्षा में आत्मविश्वास बढ़ाने में सहायक है।

**पुस्तक की मुख्य विशेषताएँ:**

- यह पुस्तक मध्य प्रदेश पुलिस कॉन्स्टेबल परीक्षा के पाठ्यक्रम को आसान और व्यवस्थित तरीके से समझने में मदद करती है।
- इसमें बौद्धिक क्षमता एवं मानसिक अभिरुचि, सामान्य ज्ञान एवं तार्किक ज्ञान, विज्ञान एवं सरल अंकगणित और मध्य प्रदेश सामान्य ज्ञान जैसे महत्वपूर्ण विषय शामिल हैं।
- पुस्तक की सम्पूर्ण थ्योरी NCERT की पाठ्यपुस्तकों और परीक्षा से संबंधित महत्वपूर्ण बिंदुओं पर आधारित है।
- इसमें 1250+ अध्यायवार महत्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न दिए गए हैं, जिससे अभ्यर्थी प्रत्येक विषय का अच्छे से अभ्यास कर सकें।
- पुस्तक में 100% अपडेटेड कंटेंट दिया गया है, जिससे अभ्यर्थियों को नवीनतम जानकारी के साथ तैयारी करने में मदद मिलती है।
- थ्योरी और अभ्यास प्रश्नों के माध्यम से अभ्यर्थी अपनी समझ, गति और सटीकता को बेहतर कर सकते हैं।

**यह पुस्तक उन अभ्यर्थियों के लिए एक उपयोगी अध्ययन एवं अभ्यास पुस्तक है, जो मध्य प्रदेश पुलिस कॉन्स्टेबल परीक्षा की तैयारी सही दिशा में करना चाहते हैं और परीक्षा में बेहतर प्रदर्शन के लिए अपने ज्ञान एवं अभ्यास को मजबूत बनाना चाहते हैं।**

### अन्य महत्वपूर्ण पुस्तकें

Buy books at great discounts on: www.examcart.in | www.amazon.in/examcart |

AGRAWAL EXAMCART
Paper Pakka Fasega!

CB2405

मध्य प्रदेश पुलिस
कॉन्स्टेबल स्टडी बुक
ISBN - 978-93-6890-288-1
₹ 499

मध्य प्रदेश पुलिस कॉन्स्टेबल स्टडी बुक

CB2405

AGRAWAL EXAMCART

मध्य प्रदेश कर्मचारी चयन मण्डल द्वारा आयोजित

# मध्य प्रदेश पुलिस कॉन्स्टेबल

**(जनरल ड्यूटी / चालक / ट्रेडमैन)**

# सम्पूर्ण स्टडी बुक

बौद्धिक क्षमता एवं मानसिक अभिरुचि। सामान्य ज्ञान एवं तार्किक ज्ञान। विज्ञान एवं सरल अंकगणित। मध्य प्रदेश सामान्य ज्ञान

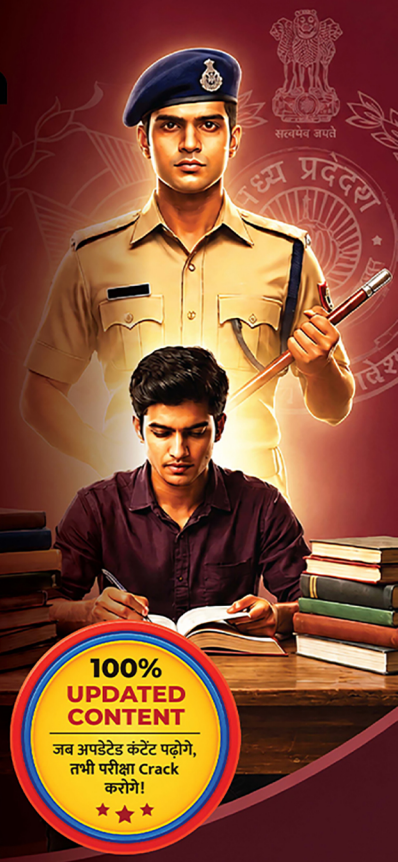


**100% UPDATED CONTENT**
जब अपडेटेड कंटेंट पढ़ोगे, तभी परीक्षा Crack करोगे!

### मुख्य विशेषताएँ

**सम्पूर्ण थ्योरी**
परीक्षा की पाठ्यक्रमानुसार थ्योरी जिसमें NCERT पाठ्यपुस्तकों और विगत प्रश्नों से सम्बंधित मुख्य बिंदुओं का समावेश है

**1250+ अभ्यास प्रश्न**
अध्यायवार महत्वपूर्ण प्रश्नों का समावेश

**सॉल्व्ड पेपर**
वर्ष 2025 के सॉल्व्ड पेपर का हल सहित समावेश

AGRAWAL EXAMCART
Paper Pakka Fasega!

| Code | Price | Pages | ISBN |
|---|---|---|---|
| CB2405 | ₹499 | 653 | 978-93-6890-288-1 |

# विषय सूची


➔ **Exam Book Material ई-बुक का Content** vii
2 प्रैक्टिस सेट्स की ई-बुक QR Code में दी गई है।

➔ **परीक्षा से सम्बन्धित महत्वपूर्ण सूचना (Important Information)** viii
मध्य प्रदेश पुलिस कॉन्स्टेबल (जनरल ड्यूटी/चालक/ट्रेडमैन) परीक्षा की सम्पूर्ण जानकारी एवं पुस्तक या किसी भी समस्या के लिए हमारा Helpline No.)

➔ **पाठ्यक्रम एवं परीक्षा पैटर्न** ix

➔ **महत्वपूर्ण अद्यतन तथ्य** xii


## सॉल्व्ड पेपर


➢ **हल प्रश्न-पत्र [परीक्षा तिथि: 30-10-2025 (प्रथम पाली)]** 1-16


## सामान्य अध्ययन


| अध्याय क्र. | अध्याय का नाम (सम्पूर्ण थ्योरी) | प्रश्नों की संख्या | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|---|
| 1. | प्राचीन भारत का इतिहास | 24 | 1-15 |
| 2. | मध्यकालीन भारत का इतिहास | 25 | 16-31 |
| 3. | आधुनिक भारत का इतिहास | 25 | 32-48 |
| 4. | कला एवं संस्कृति | 26 | 49-63 |
| 5. | भारतीय भूगोल | 25 | 64-87 |
| 6. | विश्व का भूगोल | 25 | 88-106 |
| 7. | पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी | 25 | 107-127 |
| 8. | भारतीय संविधान | 25 | 128-166 |
| 9. | भारतीय अर्थव्यवस्था | 26 | 167-210 |
| 10. | भौतिक विज्ञान | 25 | 211-236 |
| 11. | रसायन विज्ञान | 20 | 237-260 |
| 12. | जीव विज्ञान | 22 | 261-285 |
| 13. | कम्प्यूटर | 30 | 286-316 |
| 14. | सामान्य ज्ञान : विविध | 25 | 317-365 |
| | ➢ **कुल प्रश्न संख्या** | 348 | |


## गणित


| अध्याय क्र. | अध्याय का नाम (सम्पूर्ण थ्योरी) | प्रश्नों की संख्या | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|---|
| 1. | संख्या पद्धति | 17 | 366-369 |
| 2. | म.स.प. एवं ल.स.प. | 19 | 370-373 |
| 3. | भिन्न एवं दशमलव संख्याएँ | 10 | 374-375 |

| अध्याय क्र. | अध्याय का नाम (सम्पूर्ण थ्योरी) | प्रश्नों की संख्या | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|---|
| 4. | सरलीकरण | 17 | 376-381 |
| 5. | औसत | 19 | 382-385 |
| 6. | अनुपात एवं समानुपात | 18 | 386-389 |
| 7. | प्रतिशतता | 20 | 390-393 |
| 8. | लाभ–हानि एवं बट्टा | 19 | 394-397 |
| 9. | समय और कार्य | 18 | 398-401 |
| 10. | ब्याज | 22 | 402-406 |
| 11. | समय, चाल एवं दूरी | 24 | 407-412 |
| 12. | क्षेत्रमिति | 24 | 413-419 |
| 13. | बीजगणित | 11 | 420-422 |
| | ➢ **कुल प्रश्न संख्या** | **238** | |


## तर्कशक्ति


| अध्याय क्र. | अध्याय का नाम अध्याय का नाम (सम्पूर्ण थ्योरी) | प्रश्नों की संख्या | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|---|
| 1. | सांकेतिक भाषा परीक्षण | 20 | 423-427 |
| 2. | सादृश्यता परीक्षण | 20 | 428-432 |
| 3. | वर्गीकरण | 20 | 433-436 |
| 4. | शृंखला परीक्षण | 20 | 437-439 |
| 5. | लुप्त पद ज्ञात करना | 16 | 440-443 |
| 6. | पासा | 22 | 444-448 |
| 7. | गणितीय संक्रियाएँ | 19 | 449-452 |
| 8. | वेन आरेख | 21 | 453-458 |
| 9. | अंकगणितीय तर्कशक्ति | 19 | 459-462 |
| 10. | आकृति सादृश्यता/समानता | 15 | 463-467 |
| 11. | आकृति शृंखला | 19 | 468-471 |
| 12. | आकृति वर्गीकरण | 15 | 472-474 |
| 13. | सन्निहित आकृतियाँ | 20 | 475-478 |
| 14. | कागज काटना और मोड़ना | 9 | 479-480 |
| 15. | दर्पण और जल प्रतिबिम्ब | 21 | 481-484 |

| अध्याय क्र. | अध्याय का नाम अध्याय का नाम (सम्पूर्ण थ्योरी) | प्रश्नों की संख्या | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|---|
| 16. | आकृति पूर्ण करना | 21 | 485-488 |
| 17. | अंग्रेजी वर्णमाला परीक्षण | 18 | 489-492 |
| 18. | दिशा परीक्षण | 18 | 493-497 |
| 19. | रक्त सम्बन्ध | 18 | 498-501 |
| 20. | शब्दों का तार्किक क्रम | 21 | 502-504 |
| 21. | घन एवं घनाभ | 15 | 505-507 |
| 22. | श्रेणी परीक्षण | 19 | 508-511 |
| 23. | पहेली परीक्षण | 15 | 512-516 |
| 24. | न्याय संगत | 15 | 517-520 |
| 25. | कथन एवं निष्कर्ष | 15 | 521-524 |
| 26. | कथन एवं तर्क | 15 | 525-529 |
| 27. | डेटा पर्याप्तता | 19 | 530-536 |
| 28. | आकृतियों को गिनना | 18 | 537-542 |
| 29. | आकृतियों का निर्माण | 18 | 543-546 |
| 30. | आकृति आव्यूह | 18 | 547-551 |
| 31. | बिन्दुओं की स्थिति | 20 | 552-555 |
| | ➢ **कुल प्रश्न संख्या** | 562 | |


## मध्य प्रदेश सामान्य ज्ञान


| अध्याय क्र. | अध्याय का नाम (सम्पूर्ण थ्योरी) | प्रश्नों की संख्या | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|---|
| 1. | मध्य प्रदेश : एक दृष्टि में | 5 | 1-3 |
| 2. | मध्य प्रदेश : ऐतिहासिक परिदृश्य | 4 | 4-9 |
| 3. | मध्य प्रदेश : कला एवं संस्कृति | 6 | 10-14 |
| 4. | मध्य प्रदेश : अनुसूचित जातियाँ एवं जनजातियाँ | 4 | 15-16 |
| 5. | मध्य प्रदेश : भौगोलिक परिदृश्य | 5 | 17-18 |
| 6. | मध्य प्रदेश : जलवायु | 5 | 19-20 |
| 7. | मध्य प्रदेश : कृषि एवं पशुपालन | 5 | 21-26 |
| 8. | मध्य प्रदेश : अपवाह तन्त्र एवं नदियाँ | 5 | 27-29 |
| 9. | मध्य प्रदेश : राष्ट्रीय उद्यान एवं अभयारण्य | 5 | 30-32 |
| 10. | मध्य प्रदेश : खनिज सम्पदा | 5 | 33-34 |
| 11. | मध्य प्रदेश : ऊर्जा संसाधन | 3 | 35-36 |

| अध्याय क्र. | अध्याय का नाम (सम्पूर्ण थ्योरी) | प्रश्नों की संख्या | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|---|
| 12. | मध्य प्रदेश : जनगणना–2011 | 5 | 37-41 |
| 13. | मध्य प्रदेश : पर्यटन | 5 | 42-45 |
| 14. | मध्य प्रदेश : खेलकूद | 4 | 46-47 |
| 15. | मध्य प्रदेश : प्रमुख व्यक्तित्व | 4 | 48-49 |
| 16. | मध्य प्रदेश : विविध | 5 | 50-51 |
| 17. | मध्य प्रदेश : बजट 2026-27 | — | 52-53 |
| | ➢ **कुल प्रश्न संख्या** | 75 | |


## परिशिष्ट


| अध्याय क्र. | अध्याय का नाम (सम्पूर्ण थ्योरी) | प्रश्नों की संख्या | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|---|
| 1. | घातांक एवं करणी | 20 | 1-6 |
| 2. | मिश्रण और साझेदारी | 20 | 7-10 |
| 3. | क्रमचय एवं संचय | 18 | 11-14 |
| 4. | प्रायिकता | 18 | 15-17 |
| | ➢ **कुल प्रश्न संख्या** | 76 | |

# अतिरिक्त अध्ययन सामग्री ई-बुक
# (Extra Study Material E-Book)

**Extra Study Material ई-बुक का Content**

- 2 प्रैक्टिस सेट्स की ई-बुक
- डिस्काउंट कूपन दिया गया है। उसका उपयोग करें और 'www.examcart.in' से हमारी किताबें सबसे अच्छे डिस्काउंट पर खरीदें।

**नोट : Link Expire** होने से पहले दिए गए **QR Code** को स्कैन करके आप यह **Extra Study Material E-Book** को **Download** कर लें।

## ऐसी पुस्तकें जो कोई आपको बताना नहीं चाहता!

इन अनोखी पुस्तकों ने कई छात्रों को उनके पहले प्रयास में ही परीक्षा पास करने में मदद की है और हम जो कहते हैं, उसे साबित भी करते हैं—इसीलिए हर पुस्तक के कुछ सैंपल चैप्टर दिए गए हैं। हम गारंटी देते हैं कि इन्हें पढ़ने के बाद आपको समझ आएगा कि ये पुस्तकें क्यों सबसे बेहतरीन हैं और क्यों इतने सारे छात्र इनसे सफल हुए हैं।

**नोट**

पढ़ने के लिए, किसी भी पुस्तक के पास दिए गए **QR Code** को स्कैन करें, उसके वेबसाइट पेज पर **"View PDF"** पर क्लिक करें। अगर पुस्तक पसंद आए, तो **Extra Study Material** ई-बुक में दिया गया डिस्काउंट कूपन इस्तेमाल करें और बेहतरीन डिस्काउंट भी पाएँ!

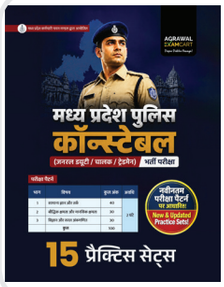


**मध्य प्रदेश पुलिस कॉन्स्टेबल (Practice Sets)**

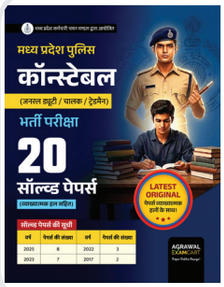


**मध्य प्रदेश पुलिस कॉन्स्टेबल (Solved Papers)**

# अध्याय 1 प्राचीन भारत का इतिहास

## 1. इतिहास और उसके स्रोत

- इतिहास कालानुक्रमिक रूप से पिछली घटनाओं का अध्ययन है। इतिहास हमें उन प्रक्रियाओं को समझने में मदद करता है जिन्होंने प्रारंभिक मानवों को अपने पर्यावरण पर सफलतापूर्वक विजय प्राप्त करने और वर्तमान समय की सभ्यताओं को विकसित करने में सक्षम बनाया।
- **इतिहास का विभाजन:** इतिहास को आम तौर पर तीन समय अवधियों में विभाजित किया जाता है – प्रागितिहास, आद्य–इतिहास और इतिहास।
  - **प्रागैतिहास:** प्रागैतिहासिक काल वह समय है जब लेखन का आविष्कार नहीं हुआ था। इसलिए इस काल का कोई लिखित अभिलेख उपलब्ध नहीं है। प्रागितिहास का हमारा ज्ञान पूरी तरह से पुरातत्व पर आधारित है। पुरातत्वविद् इस काल के बारे में जानने के लिए अतीत के भौतिक अवशेषों जैसे बर्तन, आभूषण, औजार, सिक्के, हड्डियाँ आदि का अध्ययन करते हैं।
  - **आद्य–इतिहास:** यह वह काल है जिसके लिखित अभिलेख तो हमारे पास उपलब्ध हैं लेकिन वे बहुत कम हैं और पढ़े नहीं जा सकते। अतः इस काल की भी जानकारी के मुख्य स्रोत पुरातात्विक स्रोत ही हैं। इस अवधि के लिए एक उदाहरण सिंधु घाटी सभ्यता है।
  - **इतिहास:** लेखन के आविष्कार के बाद के समय को इतिहास कहा जाता है। प्रारंभिक लेखन चट्टानों, स्तंभों, ताम्रपत्रों, शिला लेखों, ताड़ के पत्तों और भूर्ज वृक्षों की छालों पर किया जाता था। हालांकि इनमें से अधिकांश साक्ष्य समय के साथ नष्ट हो गए हैं, जो बचे हैं वे सूचना के समृद्ध स्रोत हैं।
- **इतिहास में तिथियाँ:** BCE का मतलब बिफोर द कॉमन एरा और CE का मतलब कॉमन एरा है। बीसीई में अभिव्यक्त वर्षों को पीछे की ओर गिना जाता है। उदाहरण के लिए 99 BCE (ईसा पूर्व) से पहले 100 BCE (ईसा पूर्व) आता है। सीई में व्यक्त किए गए वर्षों को आगे गिना जाता है। उदाहरण के लिए, 99 CE 100 CE से पहले आता है।
- **इतिहास के स्रोत:** स्रोत हमारे इतिहास को समझने में हमारी मदद करते हैं। ये स्रोत दो प्रकार के होते हैं: पुरातात्विक स्रोत और साहित्यिक स्रोत। साहित्यिक और पुरातात्विक अभिलेख दो मुख्य श्रेणियां हैं जो प्राचीन भारतीय इतिहास का प्रमाण देती हैं। साहित्यिक स्रोत में वैदिक, संस्कृत, पाली, प्राकृत और अन्य साहित्य के साथ–साथ विदेशी साहित्य भी शामिल है। पुरातात्विक स्रोत में पुरालेखीय, मुद्राशास्त्रीय और अन्य स्थापत्य अवशेष शामिल हैं।

**प्राचीन पुस्तकें और उनके लेखक**

| पुस्तकें | लेखक | पुस्तकें | लेखक |
|---|---|---|---|
| मिताक्षरा | विज्ञानेश्वर | गीत गोविंद | जयदेव |
| दयाभाग | जीमूतवाहन | पंचतंत्र | विष्णु शर्मा |
| मुद्राराक्षस, देवीचंद्रगुप्तम | विशाखादत्त | भक्ति शतक | भृतिहारी |
| विक्रमादेवचरित | विल्हण | दशावतार चरित | क्षेमेंद्र |
| स्वप्नवासवदत्तम, चारुदत्त | भास | नितिसार | कमंदक |
| प्रबंध कोश, काव्य मीमांसा, कर्पूरमंजरी, हरविलास, बाल रामायण | राजशेखर | नाट्य शास्त्र | भरतमुनि |
| हर्षचरित | बाणभट्ट | रामचरितमानस | तुलसीदास |
| कामसूत्र | वात्स्यायन | बृहत् कथा | गुणाढ्य |
| मृच्छकटिक | शूद्रक | शिशुपाल वध | माघ |
| अमरकोष | अमरसिंह | संगीत रत्नाकर | सारंगदेव |
| ललित – विग्रहराज | सोमदेव | सुश्रुत संहिता (सर्जरी पर आधारित) | सुश्रुत |
| प्रबंध चिंतामणि (1304) और विसारसेनी | मेरुतुंग | माध्यमिका सूत्र | नागार्जुन |
| सिद्धांत शिरोमणि | भास्कर– II | सतसई | बिहारी लाल |
| मुशिका वंश | अतुला | हितोपदेश | नारायण पंडित |
| मिलिंद पन्हो | नागसेन | कृति कौमुदी, मनसोल्लासा | सोमेश्वर तृतीय (चालुक्य राजा) |
| बृहत् संहिता | वराहमिहिर | शुक्र नीति सार | शुक्र |
| उत्तर रामचरित | भवभूति | गौदावहो | वाक्पति |
| नवसहांकचरित | पद्मगुप्त | गाथा सप्तशती | हल (सातवाहन राजा) |
| रामचरित | संध्याकार नंदी | मतविलासा प्रहसन | महेन्द्रवर्मन प्रथम (पल्लव राजा) |
| काव्य दर्श | दण्डी | रत्नावली, नागानंद, प्रियदर्शिका | हर्षवर्धन |
| कुमारपाल चरित | हेमचंद्र सूरी | परिशिष्ट पर्व | हेमचंद्र सूरी |
| नीतिशतक और श्रृगारशतक, वैराग्यशतक | भर्तृहरि | महाभाष्य | पतंजलि |

**विदेशी पुस्तकें और उनके लेखक**

| पुस्तकें | लेखक |
|---|---|
| युद्ध का इतिहास | अरिस्टोबुलुस |
| प्राकृतिक इतिहास – विज्ञान | प्लिनी |
| भूगोल | टॉलेमी |
| पेरिप्लस ऑफ एरिथ्रियन सी | अज्ञात लेखक |
| इंडिका | मेगस्थनीज |
| हिस्टोरिका | हेरोडोटस |
| सिकंदर की जीवनी | अनासिक्रिटस |
| फाह्यान की यात्राएँ | फाल्यान |
| पश्चिमी दुनिया के रिकॉर्ड | हुएन त्सांग |
| ह्वेन त्सांग की जीवनी | व्ही ली |
| बौद्ध धर्म का इतिहास | लामा तारानाथ |
| मार्को पोलो की यात्राएँ | मार्को पोलो |

**महत्वपूर्ण शिलालेख और शासक**

| शिलालेख | शासक |
|---|---|
| हाथीगुम्फा शिलालेख | कलिंग शासक खारवेल |
| ऐहोल शिलालेख | पुलकेशिन II |
| नासिक शिलालेख | गौतमी बालश्री |
| जूनागढ़ शिलालेख | रुद्रदामन |
| इलाहाबाद स्तंभ शिलालेख (प्रयाग प्रशस्ति) | समुद्रगुप्त |
| मंदसौर शिलालेख | मालवा शासक यशोवर्मन |
| ग्वालियर शिलालेख | प्रतिहार राजा भोज |
| देवपारा शिलालेख | बंगाल के शासक विजयसेन |
| भितरी और जूनागढ़ शिलालेख | स्कन्दगुप्त |

## 2. प्रागैतिहासिक संस्कृतियां

- आयोग की रिपोर्ट के अनुसार, वर्तमान पुरातात्विक प्रणाली में तीन मुख्य युग शामिल हैं – पाषाण युग, कांस्य युग और लौह युग। युगों का वर्गीकरण 1818 और 1820 में डेनिश पुरातत्वविद् क्रिश्चियन जुर्गेसन थॉमसन द्वारा विकसित किया गया था। कृपया ध्यान दें कि लिपि के विकास से पहले की अवधि को प्रागैतिहासिक काल कहा जाता है। इसे पाषाण युग भी कहा जाता है।

**पाषाण युग के चरण**

**नवपाषाण (9000 – 1000 ईसा पूर्व/खाद्य उत्पादक):** इस युग के दौरान, शिकारियों ने कृषि के बारे में सीखा। सबसे पहले उन्होंने जंगली फसलें इकट्ठी कीं। लगभग 10,000 साल पहले उन्होंने अनाज, फल और सब्जियों का उत्पादन शुरू किया। उन्होंने सींग, पत्थर और लकड़ी से एक हल बनाया और झुंड के जानवरों की मदद से जमीन पर खेती करना शुरू कर दिया। वे अनाज पीसने के लिए पत्थर के ओखली और मूसल का इस्तेमाल करते थे।

मनुष्य द्वारा प्रयोग किया जाने वाला पहला अनाज जौ था।

### क्या आप जानते हैं?

- ★ मेहरगढ़ एक नवपाषाण युग स्थल है जो पाकिस्तान के बलूचिस्तान के कच्ची मैदानों पर बोलन दर्रे के पास स्थित था। यह सिंधु नदी के पश्चिम में स्थित है और सिबी, कलात और क्वेटा के वर्तमान पाकिस्तानी शहरों के बीच स्थित है।
- ★ इस स्थल पर खेती के सबसे पुराने साक्ष्य यह सुझाव देते हैं कि मेहरगढ़ के स्थल पर 7000 ईसा पूर्व के रूप में एक सभ्यता मौजूद थी जो हड़प्पा सभ्यता से 3500 साल पहले की है।

- **सिंधु सभ्यता:** सिंधु घाटी (हड़प्पा) सभ्यता भारत में शहरीकरण के पहले चरण का प्रतिनिधित्व करती है। यह सभ्यता 'कांस्य युग' की थी। यह सभ्यता भारत और पाकिस्तान में 1.5 मिलियन वर्ग किलोमीटर से अधिक क्षेत्र में फैली हुई है। पश्चिम में पाकिस्तान–ईरान सीमा शोर्तुगई (अफगानिस्तान) उत्तर में आलमगीरपुर (भारत में उत्तर प्रदेश) पूर्व में और दक्षिण में दैमाबाद (भारत में महाराष्ट्र) वे सीमाएँ हैं जिनके साथ हड़प्पा संस्कृति का विस्तार रहा है। इसकी अधिक संघनन गुजरात, पाकिस्तान, राजस्थान और हरियाणा के क्षेत्रों में पाया जाता है।
- हड़प्पा के खंडहरों का वर्णन सबसे पहले ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के सैनिक और खोजकर्ता चार्ल्स मैसन ने अपनी पुस्तक में किया था। उन्होंने उत्तर–पश्चिम सीमांत प्रांत में इस शहर की खोज की जो अब पाकिस्तान में है।
- हड़प्पा, उपमहाद्वीप के सबसे पुराने शहरों में से एक और सिंधु नदी के तट पर, खोजा जाने वाला पहला शहर था। सिंधु नदी के तट पर फलने–फूलने के कारण इसे ''सिंधु घाटी सभ्यता" का नाम दिया गया ।
- हड़प्पा संस्कृति को विभिन्न चरणों अर्थात प्रारंभिक हड़प्पा (3000–2600 ईसा पूर्व), परिपक्व हड़प्पा (2600–1900 ईसा पूर्व) और उत्तर हड़प्पा (1900–1700 ईसा पूर्व) में विभाजित किया गया है।
- हड़प्पा की सिंधु घाटी साइट पहली बार 1826 सीई में चार्ल्स मेसन और 1831 में अलेक्जेंडर बर्न्स द्वारा अमरी में देखी गई थी। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) के पहले सर्वेक्षक अलेक्जेंडर कनिंघम ने 1853, 1856 और 1875 में इस साइट का दौरा किया था।
- 1924 में एएसआई के महानिदेशक सर जॉन मार्शल ने हड़प्पा और मोहनजोदड़ो (खुदाई की जाने वाली पहली साइट) के बीच कई सामान्य विशेषताएं पाईं। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि वे एक बड़ी सभ्यता का हिस्सा थे। मोहनजोदड़ो के पुरातात्विक स्थल को 1980 में यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया था।
- **सिंधु सभ्यता की समय अवधि**
  - **भौगोलिक सीमा:** दक्षिण एशिया
  - **अवधि:** कांस्य युग
  - **समय:** 3300 से 1900 ईसा पूर्व (रेडियोकार्बन डेटिंग पद्धति का उपयोग करके निर्धारित)
  - **क्षेत्र:** 13 लाख वर्ग किमी
  - **शहर:** 6 बड़े शहर
  - **गांव:** 200 से अधिक

| साइट | जाँच – परिणाम |
|---|---|
| हड़प्पा | **उत्खनन:** दयाराम साहनी (1921), माधो स्वरूप वत्स (1926) और सर मोर्टिमर व्हीलर (1946) |
| | **पुरातात्विक निष्कर्ष:** पंक्ति में छह अन्न भंडार, श्रमिकों के आवास, उर्वरा देवी की मुहर, कब्रिस्तान (आर – 37, एच), चित्रित मिट्टी के बर्तन, देवी माँ की मूर्ति, लिंगम (पुरुष यौन अंग) और योनी (महिला यौन अंग) के पत्थर के प्रतीक, लकड़ी के बक्से में जौ और गेहूँ, तांबे का पैमाना, कांस्य के लिए एक क्रूसिबल और तांबे से बना दर्पण, वैनिटी बॉक्स, पासा प्राप्त हुए हैं। |
| मोहनजोदड़ो/मृतकों का टीला/नखलिस्तान/सिंध का मरूद्यान | **उत्खनन:** राखल दास बनर्जी (1922), मैके (1927) और मोर्टिमर व्हीलर (1930)<br>**पुरातात्विक निष्कर्ष:** विशाल अन्न भंडार, विशाल स्नानागार (यह सभ्यता की सबसे बड़ी इमारत है), सभा भवन (असेंबली हॉल), पशुपति महादेव/प्रोटो शिव की मुहर, एक नृत्य करने वाली लड़की की कांस्य प्रतिमा, दाढ़ी वाले व्यक्ति की सेलखड़ी की मूर्ति, देवी माँ की मिट्टी की मूर्तियां, सूती वस्त्र के टुकड़े, ईंट के भट्टे, दो मेसोपोटामिया की मुहरें, 1398 मुहरें (सभ्यता की कुल मुहरों का 56%)। |
| लोथल | **उत्खनन:** एस.आर. राव (1957) |
| | **पुरातात्विक निष्कर्ष:** गोदीवाडा (डॉकयार्ड), चावल की भूसी, आग की वेदी, एक घोड़े की टेराकोटा मूर्ति, डबल दफन (एक ही कब्र में दफन एक नर और एक मादा), फारसी / ईरानी और बहरीनियन मुहर, पक्षी और लोमड़ी के साथ चित्रित एक जार। |
| कालीबंगन/काले रंग की चूड़ियाँ | **उत्खनन:** अमला नंद घोष (1953), डॉ. बी.बी. लाल और बी.के. थापर (1961) |
| | **पुरातात्विक निष्कर्ष:** एक पूर्व–हड़प्पा क्षेत्र, सात अग्नि वेदी, सजी हुई ईंटें, एक खिलौना गाड़ी के पहिये, मेसोपोटामिया की बेलनाकार मुहर। |
| चन्हूदडो | **उत्खनन:** एनजी मजूमदार (1931), ईजेएच मैके (1935) |
| | **पुरातात्विक निष्कर्ष:** बिना गढ़ वाला शहर, दवात, लिपिस्टिक, मोतियों की दुकान, ईंट पर बिल्ली का पीछा करते आदि कुत्ते के पंजे की आकृति, बैलगाड़ी का टेराकोटा मॉडल, कांस्य खिलौना गाड़ी। |
| रंगपुर (गुजरात) | **उत्खनन:** एम. एस. वत्स (1931), एस. आर. राव (1953–54)<br>**पुरातात्विक निष्कर्ष:** चावल की भूसी |
| बनावली (हिसार, हरियाणा) | **उत्खनन:** आरएस बिष्ट (1973–74) |
| | **पुरातात्विक निष्कर्ष:** ग्रिड पैटर्न टाउन प्लानिंग का अभाव, व्यवस्थित जल निकासी व्यवस्था का अभाव, मिट्टी का बना हल, खिलौना हल। |
| आलमगीरपुर (मेरठ, यूपी) | **उत्खनन:** वाई डी शर्मा (1958) |
| कोट दीजी (सिंध, पाकिस्तान) | **उत्खनन:** घुर्रे (1935), फजल अहमद (1955) |
| अमरी (सिंध, पाकिस्तान) | **उत्खनन द्वारा:** एनजी मजूमदार (1929) |
| रोपड़ (पंजाब) | **उत्खनन:** वाई डी शर्मा (1955–56) |
| सुरकोटड़ा (कच्छ, गुजरात) | **उत्खनन:** जेपी जोशी (1964) |
| | **पुरातात्विक खोज:** घोड़े की हड्डियाँ (केवल वह स्थान जहाँ घोड़े की हड्डियाँ मिली हैं), ओवल कब्र, पॉट दफन। |
| सुतकनाडोर (सिंध, पाकिस्तान) | **द्वारा उत्खनन:** ए स्टीन (1927) |
| धोलावीरा, गुजरात | **उत्खनन:** जेपी जोशी, आरएस बिष्ट (1990–91) |

| साइट | जाँच – परिणाम |
|---|---|
| | **पुरातात्विक निष्कर्ष:** एक अद्वितीय जल संचयन प्रणाली और इसकी विशेष जल निकासी प्रणाली, एक विशाल जल जलाशय, यहाँ साइट को 3 भागों में विभाजित किया गया है। |
| राखीगढ़ी (हरियाणा) | **उत्खनन द्वारा:** अमरेंद्र नाथ (2014) |
| दैमाबाद | **पुरातात्विक खोज:** कांस्य चित्र (रथ, बैल, हाथी और गैंडे के साथ सारथी) |

### क्या आप जानते हैं?

★ गोला ढोरो सिंधु घाटी सभ्यता से संबंधित एक पुरातात्विक स्थल है, जो भारत के गुजरात के कच्छ जिले में बगासरा के पास कच्छ की खाड़ी में स्थित है। इस स्थल में अंदर और बाहर रहने वाले क्वार्टर और निर्माण स्थलों के साथ लगभग 50. 50 मीटर का एक छोटा गढ़वाली क्षेत्र है।

- **हड़प्पा सभ्यता की अनूठी विशेषताएँ:**
  - व्यवस्थित नगर–नियोजन 'ग्रिड सिस्टम' की तर्ज पर योजना
  - निर्माण में पक्की ईंटों का उपयोग
  - भूमिगत जल निकासी प्रणाली (धौलावीरा में विशाल जलाशय)
  - किलेबंद दुर्ग (अपवाद – चन्हुदड़ो)

### क्या आप जानते हैं?

★ प्राचीन काल में सिन्धु सभ्यता क्षेत्र को सुमेरियन लोग मेलुहा कहते थे ।सुमेरियन अभिलेख बहरीन को दिलमुन और मकरान तट को माकन के रूप में संदर्भित करते है ।

- ऐसा माना जाता है कि सिंधु सभ्यता में शासन व्यापारी वर्ग के हाथों में था।
- जहां तक धर्म का संबंध है, कोई मंदिर नहीं मिला है। माँ देवी (मातृदेवी या शक्ति) की मूर्ति योनि (महिला यौन अंग) की पूजा को संदर्भित करती है। लिंगम (लिंगम) पूजा भी प्रचलित थी।
- पशुपति शिव या जानवरों के देवता या रूद्र शिव प्रमुख पुरुष देवता थे। एक मुहर मिली है जो चार जानवरों (हाथी, बाघ, गैंडे और भैंस) से घिरे एक योगी को दर्शाती है और उनके चरणों में दो हिरण दिखाई देते हैं।
- **लिपि:** सिंधु घाटी की लिपि चित्रात्मक थी। यह लिपि अभी तक पढ़ी नहीं जा सकी है। लेखन बुस्ट्रोफेडन था और वैकल्पिक पंक्तियों में दाएं से बाएं और बाएं से दाएं लिखा जाता था।
- इस काल में प्रायः मृतकों को दफनाया जाता था।

## 3. वैदिक युग (1500–600 ईसा पूर्व)

- सिंधु घाटी सभ्यता के पतन के बाद, 1500 ईसा पूर्व के आसपास आर्यों द्वारा भूमि पर कब्जा कर लिया गया था। आर्यन शब्द का अर्थ है 'कुलीन' होता है।
- उनके कब्जे वाली भूमि को 'सप्त सिंधु' कहा जाता था जिसका अर्थ है 'सात नदियों की भूमि'। सात नदियों में सिंधु (सिंधु), वितस्ता (झेलम), आक्सिनी (चिनाब), परुष्णी (रावी), विपाशा (व्यास), शुतुद्री (सतलज) [सभी पंजाब में], और राजस्थान में सरस्वती (सरसुती) शामिल हैं। अन्य नदियाँ राजस्थान में दृषद्वती (घग्गर), गोमती (गोमल) उत्तर प्रदेश कुभा (काबुल), सुवास्तु (स्वाति), क्रुमु (कुर्रम) [सभी अफगानिस्तान में] थी

| समय, प्रसार और स्रोत | |
|---|---|
| भौगोलिक सीमा | उत्तर भारत |
| अवधि | लौह युग |
| समय | 1500 ईसा पूर्व (बीसीई) – 600 ईसा पूर्व (बीसीई) |
| सूत्रों का कहना है | वैदिक साहित्य |
| सभ्यता की प्रकृति | ग्रामीण |

- ऐसा माना जाता है कि आर्यों ने 2000 ईसा पूर्व – 1500 ईसा पूर्व के दौरान कई लहरों के रूप में मध्य एशिया से भारतीय उपमहाद्वीप में प्रवास किया था। यह एशिया माइनर, तुर्की में पाए जाने वाले बोगाजकोई शिलालेख से सिद्ध होता है। इस शिलालेख में चार वैदिक देवताओं अर्थात इंद्र, वरुण, मित्र और नासत्य का उल्लेख है।
- वैदिक युग को दो अवधियों में विभाजित किया गया है अर्थात् प्रारंभिक वैदिक (ऋग्वैदिक) काल (1500–1000 ईसा पूर्व) और बाद का वैदिक काल (1000–600 ईसा पूर्व)।
- **प्रारंभिक वैदिक (ऋग्वैदिक) काल (1500–1000 ईसा पूर्व):** इस काल के ज्ञान का एकमात्र साहित्यिक स्रोत "ऋग्वेद" है।
- **दस राजाओं की लड़ाई (दशराज्ञ युद्ध):** इस युद्ध का नाम उन दस राजाओं के नाम पर दशराज रखा गया है, जिन्होंने सुदास (तृत्सु वंश के भरत राजा) के खिलाफ लड़ाई लड़ी थी। अन्य दस राजा पुरु, यदु, तुर्वस, अनु और द्रुह्यु, अलीना, पख्त, भलानस, सिबिस और विशनिन राज्यों से थे। यह युद्ध परुष्णी (रावी) के तट पर लड़ा गया था और इस युद्ध में भरत जन के राजा सुदास की विजय हुई थी।
- इस काल में अग्नि पवित्र देवता था, क्योंकि इसे मनुष्य और ईश्वर के बीच मध्यस्थ माना जाता था। लगभग 33 देवता थे। बाद के दिनों की परंपरा ने उन्हें स्थलीय (पृथ्वी स्थान), हवाई या मध्यवर्ती (अंतरिक्ष स्थान) और आकाशीय (दुष्टाना) भगवान की 3 श्रेणियों में वर्गीकृत किया।
  - **स्थलीय (पृथ्वी अंतरिक्ष के देवता):** पृथ्वी, अग्नि, सोम, बृहस्पति और नदियाँ।
  - **आकाशीय/मध्यवर्ती (अंतरिक्ष के देवता):** इंद्र, रुद्र, वायु–वात, पर्जन्य।
  - **आकाशीय (आकाश के देवता):** धोस, सूर्य (5 रूपों मेंरू सूर्य, सावित्री, मित्र, पूषा, विष्णु), वरुण, अदिति, उषा और अश्विन।
- इंद्र, अग्नि और वरुण ऋग्वैदिक आर्यों के सबसे लोकप्रिय देवता थे।
  - **इंद्र या पुरंदर (किले को नष्ट करने वाला):** सबसे महत्वपूर्ण देवता (250 ऋग्वैदिक मंत्र उन्हें समर्पित हैं); जिन्होंने योद्धा की भूमिका निभाई और उन्हें वर्षा देवता माना जाता था।
  - **अग्नि:** दूसरा सबसे महत्वपूर्ण देवता (200 ऋग्वैदिक मंत्र उन्हें समर्पित हैं); अग्नि देवता को देवताओं और लोगों के बीच मध्यस्थ माना जाता था।

- **वरुण:** व्यक्तिकृत जल; रीता' या प्राकृतिक व्यवस्था (ऋतस्यगोप) ऋत को बनाए रखने वाला था।

- सूर्य (सूर्य) की पूजा 5 रूपों में की जाती थी—सूर्य, सावित्री, मित्र, पूषा और विष्णु।
  - **सूर्य:** सूर्य भगवान जो सात घोड़ों द्वारा संचालित अपने रथ में प्रतिदिन आकाश में घूमते थे।
  - **सावित्री (प्रकाश की देवता):** प्रसिद्ध गायत्री मंत्र उन्हें संबोधित है।
  - **मित्र:** एक आकाश देवता।
  - **पूषन:** विवाह के देवताय मुख्य कार्य—सड़कों, चरवाहों और आवारा पशुओं की रखवाली करना था।
  - **विष्णु:** एक देवता जिसने पृथ्वी को तीन चरणों (उपक्रम) में ढक लिया।
- **बाद का वैदिक काल (1000–600 ईसा पूर्व):** उत्तर वैदिक काल के दौरान, आर्यन बस्तियां वस्तुतः पूरे उत्तरी भारत (आर्यावर्त) को कवर करती थीं। संस्कृति का केंद्र अब सरस्वती से गंगा (मध्य देश) में स्थानांतरित हो गया था।
- उत्तर वैदिक काल में नर्मदा, सदानीरा (आधुनिक गंडक), चंबल आदि नदियों का उल्लेख मिलता है।
- पूर्व की ओर लोगों के विस्तार का संकेत शतपथ ब्राह्मण की एक कथा में मिलता है– कैसे विदेह माधव सरस्वती क्षेत्र से चले गए, सदानिरा को पार कर विदेह (आधुनिक तिरहुत) की भूमि पर बस गए।
- दोआब क्षेत्र में जनपद–कुरु (पुरुष और भरत का संयोजन), पंचाल (तुर्वशास और कृविस का संयोजन), काशी आदि के उद्भव तथा बाद के वैदिक साहित्य में विंध्य पर्वत (दक्षिणी पर्वत) का उल्लेख है। प्रादेशिक विभाजनों के संदर्भ में बाद के वेद भारत के तीन व्यापक विभाजन देते हैं, जैसे। आर्यावर्त (उत्तरी भारत), मध्य देश (मध्य भारत) और दक्षिणापथ (दक्षिणी भारत)।
- उत्तर वैदिक काल में बड़े राज्यों और भव्य शहरों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। तैत्तिरीय ब्राह्मण में हम राजाओं की दैवीय उत्पत्ति के सिद्धांत का उल्लेख पाते हैं।
- राजा की शक्ति के विकास की अगली कड़ी के रूप में सरकारी तंत्र पहले की तुलना में अधिक विस्तृत हो गया। ऋग्वैदिक काल के एकमात्र नागरिक अधिकारी के अलावा, नागरिक आधिकारी व पुरोहित अस्तित्व में आए।
- ये थेरू भगदुधा (कर संग्रहकर्ता), सुता/सारथी, शास्त्री (चैम्बरलेन), अक्षवापा संदेश वाहक। ऋग्वैदिक काल के सैन्य अधिकारी, सेनानी (सैन्य प्रमुख) और ग्रामणी (गाँव का मुखिया) कार्यरत् थे।
- इस अवधि में प्रांतीय सरकार की एक नियमित प्रणाली की शुरुआत भी देखी गई। इस प्रकार, हम पाते हैं कि स्थपति को आदिवासियों के कब्जे वाले बाहरी क्षेत्रों के प्रशासन का काम सौंपा गया है और सतपति सौ गाँवों के समूह का शासक होता था। अधिकारिक ग्राम अधिकारी थे। उपनिषद में वर्णित उग्रस संभवतः एक पुलिस के लिए प्रयुक्त हुआ शब्द है।
- ऋग्वैदिक युग के समान, अधिकारों का प्रयोग सभा और समिति के माध्यम से किया जाता था। इस समय तक, विदथ पूरी तरह से गायब हो गया था।
- बाद के वैदिक युग में भी राजाओं के पास स्थायी सेना नहीं थी।
- न्यायपालिका का भी विस्तार हुआ। कानून को लागू करने में राजा का बहुत महत्वपूर्ण स्थान था। एक भ्रूण की हत्या, मानव वध, विशेष रूप से एक ब्राह्मण की हत्या, सोने की चोरी और सुरा पीने को भयानक अपराध माना जाता था। देशद्रोह एक गंभीर अपराध था।
- **वैदिक साहित्य:** वैदिक साहित्य को दो श्रेणियों अर्थात श्रुतियों और स्मृतियों में वर्गीकृत किया गया है।
  - **श्रुति:** वैदिक साहित्य को "श्रुति" के रूप में जाना जाता है क्योंकि यह मौखिक रूप से पीढ़ी–दर–पीढ़ी स्थानान्तरित की गई है। कृपया ध्यान दें कि 'श्रुति' शब्द का अर्थ है "सुनना"। श्रुतियों में चार वेद, ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद शामिल हैं।
    - **वेद:** इन्हें अपौरुषेय (मनुष्य द्वारा नहीं बल्कि ईश्वर–प्रदत्त) और नित्य (सभी अनंत काल में विद्यमान) कहा जाता है। जिनमें चार वेद हैं: ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद।
    - पहले तीन वेदों (ऋग्वेद, सामवेद और यजुर्वेद) को सामूहिक रूप से वेदत्रयी (वेदों की तिकड़ी) के रूप में जाना जाता है।
      - **ऋग्वेद:** ऋग्वेद भजनों (गीतों) का संग्रह है। यह दुनिया का सबसे प्राचीन ग्रन्थ है। इसे 'मानवता का पहला वसीयतनामा' भी कहा जाता है। इसमें 1028 सूक्त हैं जिन्हें 10 मंडलों में विभाजित किया गया है।
      - छह मंडल (दूसरे से सातवें मंडल तक) को गोत्र/वंश मंडल (कुल ग्रंथ) कहा जाता है। ऐसा माना जाता है कि पहला और 10वां मंडल बाद में जोड़े गए। पुरुष सूक्त, जिसमें चार वर्णों अर्थात ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र की जानकारी मिलती है, 10वें मंडल में है। होत्री नामक पुरोहित द्वारा ऋग्वेद के मंत्रों का पाठ किया जाता था।
      - ऋग्वेद में हिमालय और हिंदुकुश पर्वतों को क्रमशः हिमवंत और मुंजवंत कहा गया है।
      - ऋग्वेद में 40 नदियों का उल्लेख है और नाडी सूक्त में 21 नदियों का उल्लेख है। इसमें पूर्व में गंगा और यमुना तथा पश्चिम में कुभा का उल्लेख है।
      - ऋग्वेद के अनुसार, सिंधु सबसे अधिक उल्लेखित नदी थी जबकि सरस्वती सबसे पवित्र नदी थी। गंगा नदी का एक बार उल्लेख किया गया है जबकि यमुना नदी का तीन बार उल्लेख किया हुआ है।
      - **सामवेद:** यह मंत्रों की पुस्तक है और संगीत से सम्बन्धित है। इसमें 1549 सूक्त हैं और सभी सूक्त (75 को छोड़कर) ऋग्वेद से लिए गए हैं। सामवेद के मंत्रों का पाठ उप्रगाता किया जाता था।
      - **यजुर्वेद:** यह यज्ञ प्रार्थनाओं की एक पुस्तक है। अर्ध्वयु नामक पुरोहित द्वारा यजुर्वेद के मंत्रों का पाठ किया जाता है। इसके दो भाग हैं कृष्ण यजुर्वेद (संपूर्ण श्लोक) और शुक्ल यजुर्वेद (पंघ और गद्य दोनों में लिखित)।
      - अथर्ववेद (जादुई सूत्रों की पुस्तक), चौथा और अंतिम, वेद जिसमें बुराइयों और बीमारियों को दूर करने के लिए मंत्र दिये गये हैं। इसे लोकिक वेद भी कहा जाता है। बहुत लंबे समय तक इसे वेदों की श्रेणी में शामिल नहीं किया गया था।

- **ब्राह्मण:** ब्राह्मण गद्य ग्रंथ हैं। इसमें वैदिक मंत्रों के अर्थ, उनके अनुप्रयोग और उनकी उत्पत्ति की कहानियों का विस्तार से वर्णन किया गया है। इसके अलावा, यह कर्मकांडों और दर्शन के बारे में भी विस्तार से बताता है।
- प्रत्येक वेद के साथ कई ब्राह्मण जुड़े हुए हैं:
  - **ऋग्वेद–** ऐतरेय और कौशिकी/संख्यान।
  - **साम वेद–** पंचविष (तांड्य महा ब्राह्मण), षडविंश, छांदोग्य और जैमिनीय।
  - **यजुर्वेद–** शतपथ (सबसे पुराना और सबसे बड़ा ब्राह्मण) और तैत्तिरीय।
  - **अथर्ववेद–** गोपथ।
- **उपनिषद:** उपनिषद दार्शनिक ग्रंथ हैं। उन्हें आमतौर पर वेदांत कहा जाता है, क्योंकि इनकी रचना वेद के अंत में हुई थी। उपनिक्षदो की संख्या 108 है। बृहदारण्यक सबसे प्राचीन उपनिषद है।

- स्मृति ग्रंथों का एक निकाय है जिसमें इतिहास, पुराण, तंत्र और आगम जैसे धर्म पर शिक्षाएँ हैं। ये शाश्वत नहीं हैं। उन्हें लगातार संशोधित किया जाता है। 'स्मृति' शब्द का अर्थ निश्चित और लिखित साहित्य है। इसमें 06 विश्व अर्थात् वेदांग/सूत्र, स्मृति धर्मशास्त्र, महाकाव्य (महाकाव्य), पुराण, उपवेद और षड–दर्शन शामिल पुरोहित हैं।
  - **महाकाव्य:** मुख्य रूप से दो महाकाव्य (महाकाव्य) हैं–
    - **रामायण या आदि काव्य की** रचना वाल्मीकि ने की थी। यह दुनिया का सबसे पुराना महाकाव्य है। इसमें 7 कांडों में 24,000 श्लोक अर्थात छंद (मूल रूप से 6,000, बाद में – 12,000, अंत में – 24,000) शामिल हैं। पहला और सातवाँ कांडा नवीनतम जोड़ा थे।
    - **महाभारत की** रचना वेद व्यास ने की थी। यह दुनिया का सबसे लंबा महाकाव्य है। वर्तमान में, इसमें 1,00,000 श्लोक अर्थात छंद और 18 पर्व शामिल हैं, जिसमें पूरक के रूप में हरिवंश है। भगवद गीता महाभारत के भीष्म पर्व से ली गई है। शांति पर्व महाभारत का सबसे बड़ा पर्व (अध्याय) है। ख्मूल रूप से इसमें 8,800 श्लोक थे और इसे जय संहिता के नाम से जाना जाता था। बाद में इसमें 24,000 श्लोक थे और इसे चतुरविंशती सहस्त्री संहिता / भरत के नाम से जाना जाता था। अंत में, इसमें 1,00,000 थे और इसे शतसहस्त्री संहिता / महाभारत के रूप में जाना गया।
  - **पुराण:** 18 प्रसिद्ध पुराण हैं। मत्स्य **पुराण** प्राचीनतम पुराण ग्रन्थ है। अन्य महत्वपूर्ण पुराण भागवत पुराण, विष्णु पुराण और वायु पुराण हैं। वे विभिन्न शाही राजवंशों की वंशावली का वर्णन करते हैं।

## 4. महाजनपद काल (600 ईसा पूर्व–325 ईसा पूर्व)

- छठी शताब्दी ईसा पूर्व (बीसीई) के दौरान कई क्षेत्रीय राज्यों का उदय हुआ। इससे गंगा के मैदानों में लोगों के सामाजिक–आर्थिक और राजनीतिक जीवन में परिवर्तन आया। उत्तरी भारत में एक नई बौद्धिक जागृति विकसित होने लगी। महावीर और गौतम बुद्ध ने इस नई जागृति का प्रतिनिधित्व किया।
- महाजनपदों की राजधानी और कुछ अन्य शहर, जो समृद्ध व्यापार के कारण फले–फूले, एक बार फिर भारत में शहरीकरण का युग लेकर आए। इसे 'द्वितीय शहरीकरण' के रूप में जाना जाता है।
- ये सोलह महाजनपद इस प्रकार थे:
  - **मगध (पटना, गया और नालंदा जिले)**
  - **अंग और वंगा (मुंगेर और भागलपुर)**
  - **मल्ल (देवरिया, बस्ती, गोरखपुर क्षेत्र)**
  - **वत्स (इलाहाबाद और मिर्जापुर)**
  - **काशी (बनारस)**
  - **कोसल (अयोध्या)**
  - **वज्जी (मुजफ्फरपुर और वैशाली)**
  - **कुरु (थानेश्वर, मेरठ और वर्तमान दिल्ली)**
  - **पाँचाल (पश्चिमी उत्तर प्रदेश)**
  - **मत्स्य साम्राज्य (अलवर, भरतपुर और जयपुर)**
  - **अश्मक (नर्मदा और गोदावरी के बीच)**
  - **गांधार (पेशावर और रावलपिंडी)**
  - **कंबोज (पाकिस्तान का हजारा जिला, उत्तर–पूर्वी कश्मीर)**
  - **अवन्ति (मालवा)**
  - **चेदि (बुन्देलखण्ड)**
  - **शूरसेन (ब्रज मंडल)**

## 5. जैन धर्म और बौद्ध धर्म

- छठी शताब्दी ईसा पूर्व (बीसीई) को प्राचीन भारत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण अवधि माना जाता है। छठी शताब्दी ईसा पूर्व (बीसीई) के दौरान व्यापार और शहरीकरण के पुनरुद्धार के साथ उत्तरी भारत में एक नई सभ्यता का विकास शुरू हुआ। उत्तर भारत में प्रमुख राजनीतिक और सामाजिक परिवर्तनों के इस दौर में बुद्ध और महावीर का जन्म हुआ। उनकी मृत्यु के बाद की सदी में, बौद्ध धर्म और जैन धर्म ने भारत में प्रमुख धर्मों के रूप में जड़ें जमा लीं।
- **जैन धर्म:** जैन शब्द की उत्पत्ति संस्कृत शब्द "जिन" से हुई है, जिसका अर्थ है स्वयं और बाहरी दुनिया पर विजय प्राप्त करना। जैन धर्म दुनिया के सबसे पुराने जीवित धर्मों में से एक है। जैन धर्म 24 तीर्थंकरों को खुद के लिए आधार बनाता है।
- एक 'तीर्थंकर', वह है जिसने अलग–अलग समय पर धार्मिक सत्य प्रकट किया। प्रथम तीर्थंकर ऋषभ और अंतिम तीर्थंकर महावीर थे। छठी शताब्दी ईसा पूर्व (बीसीई) के दौरान जैन धर्म को महावीर के तत्वावधान में प्रमुखता मिली।
- पार्श्वनाथ जैनों के 23वें तीर्थंकर थे।
- जैनों के अंतिम और 24वें तीर्थंकर वर्धमान महावीर थे।
- वर्धमान महावीर का जन्म 599 ईसा पूर्व (बीसीई) में वैशाली के पास कुंडाग्राम में हुआ था। उनकी माता लिच्छवी राजकुमारी त्रिशला थीं। उन्होंने अपना प्रारंभिक जीवन एक राजकुमार के रूप में बिताया और उनका विवाह यशोदा नामक राजकुमारी से हुआ। इस दंपति की एक बेटी हुई थी।
- तीस वर्ष की आयु में उन्होंने अपना घर छोड़ दिया और एक तपस्वी बन गए। बारह वर्षों से अधिक समय तक, महावीर एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते रहे, उन्होंने स्वयं को घोर तपस्या और आत्म–वैराग्य के अधीन किया।
- वह लिच्छवियों का एक क्षत्रिय राजकुमार था, एक समूह जो वज्जी संघ का हिस्सा था। 30 वर्ष की आयु में वे घर छोड़कर जंगल में रहने चले गए

- बारह वर्षों से अधिक समय तक, महावीर एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते रहे, उन्होंने स्वयं को घोर तपस्या और आत्म–वैराग्य के अधीन किया।
- अपनी तपस्या के तेरहवें वर्ष में, उन्होंने उच्चतम ज्ञान या सर्वज्ञता (सब कुछ जानने या असीम रूप से बुद्धिमान होने की क्षमता) या सर्वोच्च ज्ञान प्राप्त किया और जिन (विजेता), महावीर (महान नायक) और केवला के रूप में जाना जाने लगे। तत्पश्चात, वह जिना बन गयो जिसका अर्थ है 'सांसारिक सुख और आसक्ति पर विजय प्राप्त करने वाला'।
- 30 साल के उपदेश के बाद, महावीर की 72 साल की उम्र में 527 ईसा पूर्व (बीसीई) में पावापुरी में मृत्यु हो गई।
- **त्रि–रत्न या तीन रत्न:** महावीर ने मोक्ष की प्राप्ति (जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति) और कर्म से मुक्ति के लिए तीन गुना मार्ग का उपदेश दिया। वे हैं:
  - **सही विश्वास (सम्यक दर्शन):** महावीर की शिक्षाओं में विश्वास।
  - **सही ज्ञान (सम्यक ज्ञान):** महावीर की शिक्षाओं और ज्ञान में विश्वास।
  - **सही कार्य (सम्यक चरित्र):** यह महावीर के पाँच महान व्रतों यानी अहिंसा, ईमानदारी, दया, सच्चाई और दूसरों से संबंधित चीजों की लालसा या इच्छा नहीं करने के पालन को संदर्भित करता है।
- **जैन आचार संहिता / जैन धर्म के पाँच सिद्धांत:** महावीर ने अपने अनुयायियों से सदाचारी जीवन जीने को कहा। स्वस्थ नैतिकता से भरा जीवन जीने के लिए उन्होंने पाँच प्रमुख सिद्धांतों का पालन करने का उपदेश दिया। वे हैं:
  - **अहिंसा** – किसी जीव को हानि न पहुँचाना
  - **सत्य** – सत्य बोलना
  - **अस्तेय** – चोरी न करना
  - **अपरिग्रह** – संपत्ति को स्वीकार न करना
  - **ब्रह्मचर्य** – ब्रह्मचर्य

### क्या आप जानते हैं?

- ★ महावीर के एक प्रमुख शिष्य गौतम स्वामी ने महावीर की शिक्षाओं को संकलित किया, जिसे अगम सिद्धांत कहा जाता है।
- ★ कर्नाटक के श्रवणबेलगोला में बाहुबली (गोमतेश्वर, 57 फीट) की प्रतिमा भारत में अब तक की सबसे ऊँची जैन प्रतिमा है।
- ★ केवल पाँचवाँ सिद्धांत महावीर द्वारा जोड़ा गया था। अन्य उनके पिछले तीर्थंकरों की शिक्षा से लिए गए थे।
- ★ जैन धर्म के अनुसार, ब्रह्मांड छह अविनाशी तत्वों से बना है :
  - जीव (आत्मा)
  - अजीव (भौतिक पदार्थ)
  - धर्म
  - अधर्म
  - जल
  - आकाश
- ★ वे आत्माओं की बहुलता में विश्वास करते थे।
- ★ मिथिला तीन विद्वान संतों – गार्गी, कपिला और मैत्रेय का घर था।
- ★ मिथिला शहर की पहचान नेपाल के धनुषा जिले में आधुनिक जनकपुर के रूप में की जाती है।
- ★ मैत्रेय एक बोधिसत्व हैं, जो बौद्ध ग्रंथों के अनुसार, गौतम बुद्ध के अगले अवतार होंगे।

- **जैन धर्म के संप्रदाय/पद्धति:** जैन धर्म को दो प्रमुख संप्रदायों में विभाजित किया गया हैरू दिगंबर और श्वेतांबर। विभाजन मुख्य रूप से मगध में अकाल के कारण हुआ जिसने भद्रबाहु के नेतृत्व वाले एक समूह को दक्षिण भारत जाने के लिए मजबूर किया।
- 12 वर्षों के अकाल के दौरान, दक्षिण भारत में समूह सख्त प्रथाओं पर अड़ा रहा, जबकि मगध में समूह ने अधिक लचीला रवैया अपनाया और सफेद कपड़े पहनना शुरू कर दिया।
- अकाल की समाप्ति के बाद, जब दक्षिणी समूह मग्नध में वापस आया, तो परिवर्तित प्रथाओं ने जैन धर्म को दो संप्रदायों में विभाजित कर दिया।
  - **दिगंबर:** इस संप्रदाय के साधु पूर्ण नग्नता में विश्वास करते हैं। पुरुष साधु कपड़े नहीं पहनते हैं जबकि महिला भिक्षु बिना सिले सादी सफेद साड़ी पहनती हैं। सभी पाँच व्रतों (सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य) का पालन करें। माना कि स्त्री मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकती। भद्रबाहु इस संप्रदाय के प्रतिपादक थे।
  - **श्वेतांबर:** साधु सफेद वस्त्र पहनते हैं। केवल 4 व्रतों का पालन करें (ब्रह्मचर्य को छोड़कर)। विश्वास करें कि महिलाएं मुक्ति प्राप्त कर सकती हैं। स्थूलभद्र इस संप्रदाय के प्रतिपादक थे।
- **जैन परिषद:**
  - **प्रथम जैन परिषद:**
    - यह तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में पाटलिपुत्र में आयोजित किया गया था और इसकी अध्यक्षता स्थूलभद्र ने की थी।
    - पूर्वो के स्थान पर 12 अंगो का संकलन किया गया था।
  - **दूसरी जैन परिषद:**
    - यह 512 ईस्वी में वल्लभी (गुजरात) में आयोजित किया गया था और इसकी अध्यक्षता देवर्धि क्षमाश्रमण ने की थी।
    - इसने 12 अंग और 12 उपांगों के अंतिम रूप से संकलित किया गया था।
- **जैन धर्म का पतन:** शाही संरक्षण की कमी, इसकी गंभीरता, गुटबाजी और बौद्ध धर्म के प्रसार के कारण भारत में जैन धर्म का पतन हुआ।
- **बौद्ध धर्म:** गौतम बुद्ध वर्तमान नेपाल में कपिलवस्तु के शाक्यों के एक क्षत्रिय कबीले के प्रमुख शुद्धोदन के पुत्र थे। उनका बचपन का नाम सिद्धार्थ था। चूंकि वे शाक्य वंश के थे, इसलिए उन्हें श्शाक्य मुनि' के नाम से भी जाना जाता था।
- गौतम बुद्ध का जन्म 540 ईसा पूर्व में कपिलवस्तु के पास लुंबिनी गार्डन में हुआ था। उनकी माता, मायादेवी (महामाया) का उनके जन्म के कुछ दिनों के बाद निधन हो गया और उनका पालन–पोषण उनकी सौतेली माँ गौतमी ने किया। सांसारिक मामलों की ओर उनका ध्यान हटाने के लिए, उनके पिता ने सोलह वर्ष की आयु में उनकी शादी यशोधरा नामक राजकुमारी से कर दी। उन्होंने कुछ समय के लिए एक सुखी वैवाहिक जीवन व्यतीत किया और राहुल नाम का एक पुत्र हुआ।
- पारिवारिक जीवन के दौरान से ही गौतम बुद्ध कई वर्षों तक भटकते रहे, अन्य विचारकों से मिलते रहे और विचार–विमर्श करते रहे
- वे "फोर ग्रेट साइट्स" के बाद तपस्वी बन गए। चार महान दृश्य 29 वर्ष की आयु में, सिद्धार्थ ने चार दुरूखद दृश्य देखे। वह थे:
  - एक बेपरवाह बूढ़ा जिसने चिथड़े, पहन रखे हैं अपनी झुकी हुई पीठ के साथ।

- एक बीमार आदमी एक लाइलाज बीमारी से पीड़ित है।
- एक मृत आदमी को उसके परिजन रोते बिलखते श्मशानघाट में ले जा रहे हैं।
- एक तपस्वी

- सिद्धार्थ इन स्थलों से गहराई से हिल गए थे। उन्होंने एक तपस्वी को भी देखा जिसने संसार को त्याग दिया था और दुःख का कोई निशान नहीं पाया। इन 'चार महान स्थलों' ने उन्हें दुनिया को त्यागने और दुख के कारण की खोज करने के लिए प्रेरित किया।
- 512 ईसा पूर्व में, वह अपना महल छोड़कर सत्य की खोज में जंगल में चले गये। अपने भटकने के दौरान, वह कई दिनों तक एक पीपल के पेड़ के नीचे बैठे रहे जब तक कि उन्हें ज्ञान की प्राप्ति नहीं हो गई।
- जिस स्थान पर उन्होंने ज्ञान प्राप्त किया, महाबोधि मंदिर, बोधगया (बिहार) में आज भी मौजूद है। अपने ज्ञानोदय के बाद, बुद्ध ने लोगों को अपना ज्ञान प्रदान करने का निर्णय लिया।
- वे वाराणसी गए और वहाँ अपना पहला उपदेश सारनाथ में दिया। उन्होंने मगध और कोसल के राज्यों में प्रचार किया। बड़ी संख्या में लोग उनके अपने परिवार सहित उनके अनुयायी बन गए। पैंतालीस वर्षों के उपदेश के बाद, उन्होंने अस्सी वर्ष की आयु में कुशीनगर (उत्तर प्रदेश में गोरखपुर के पास) में 483 ईसा पूर्व (बीसीई) में अंतिम सांस ली।
- **बुद्ध के चार आर्य सत्य**
  - **दुखा (पीड़ा का सच):** बौद्ध धर्म के अनुसार, सब कुछ दुख है (सब्बम दुखम)। यह दर्द का अनुभव करने की क्षमता को संदर्भित करता है न कि केवल एक व्यक्ति द्वारा अनुभव किए गए वास्तविक दर्द और दुःख को।
  - **समुदाय (दुख के कारण):** तृष्णा (इच्छा) दुख का मुख्य कारण है। हर दुख का एक कारण होता है और यह जीवन का एक हिस्सा और पार्सल है।
  - **निरोध (दुःख के अंत) :** निर्वाण/निर्वाण की प्राप्ति से पीड़ा/दुःख का अंत हो सकता है।
  - **अष्टांगिक–मार्ग (दुख के अंत की ओर ले जाने वाले मार्ग):** दुख का अंत अष्टांगिक मार्ग में निहित है।
- **आठ गुना पथ:** इसमें ज्ञान, आचरण और ध्यान प्रथाओं से संबंधित विभिन्न परस्पर क्रियाएं शामिल हैं।
  - सम्यक दृश्य (सम्मा दित्ती)
  - सम्यक इरादा (सम्मा संगकप्पा)
  - सम्यक भाषण (सम्मा वेक्का)
  - सम्यक कार्रवाई (सम्मा कम्मंता)
  - सम्यक आजीविका (सम्मा अजिवा)
  - सम्यक सचेतनता (सम्मा सती)
  - सम्यक प्रयास (सम व्यायाम)
  - सम्यक एकाग्रता (सम्मा समाधि)
- **जीवन का पहिया:** यह दुनिया के बौद्ध दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करता है।
- इस घटना को 'धम्म चक्का पवत्तन' के रूप में जाना जाता है जिसका अर्थ है 'धर्म का चक्र बदलना'। यह कार्यक्रम सारनाथ में आयोजित किया गया था।
- **बौद्ध संघ:** बुद्ध ने संघ नामक एक मिशनरी संगठन की नींव रखी, जिसका अर्थ है उनके विश्वास के प्रचार के लिए श्संगठनश। सदस्यों को भिक्खु (भिक्षु) कहा जाता था। वे तपस्या का जीवन व्यतीत करते थे।

### क्या आप जानते हैं?

- **चैत्य** – एक बौद्ध मंदिर या एक ध्यान कक्ष।
- **विहार** – मठधभिक्षुओं के रहने के स्थान।
- **स्तूप** – बुद्ध के शरीर के अवशेषों पर निर्मित, वे महान कलात्मक मूल्य के स्मारक।

- **बौद्ध धर्म में विभाजन:** कनिष्क के शासनकाल के दौरान, बौद्ध भिक्षु नागार्जुन ने बौद्ध धर्म के पालन के तरीके में सुधारों की शुरुआत की। परिणामस्वरूप, बौद्ध धर्म हीनयान और महायान के रूप में दो भागों में विभाजित हो गया।
  - **हीनयान (कम वाहन):** यह बुद्ध द्वारा प्रचारित मूल पंथ था। इस रूप के अनुयायी बुद्ध को अपना गुरु मानते थे और उन्हें भगवान के रूप में नहीं पूजते थे। उन्होंने मूर्ति पूजा से इनकार किया और लोगों की भाषा पाली को जारी रखा।
  - **महायान (बड़ा वाहन):** इस संप्रदाय में, बुद्ध को भगवान और बोधिसत्व को उनके पिछले अवतार के रूप में पूजा जाता था। अनुयायियों ने बुद्ध और बोधिसत्व के चित्र और मूर्तियाँ बनाई और प्रार्थनाएँ कीं, और उनकी स्तुति में भजनों (मंत्रों) का पाठ किया। बाद में, उन्होंने अपनी धार्मिक पुस्तकें संस्कृत में लिखीं। बौद्ध धर्म के इस रूप को कनिष्क ने संरक्षण दिया था।

**बौद्ध परिषदें**

| आयोजन | जगह | अध्यक्ष | संरक्षक राजा |
|---|---|---|---|
| पहला | राजगृह | महाकस्सप | अजातशत्रु |
| दूसरा | वैशाली | साबकमीरा/ सबाकामी | कालाशोक |
| तीसरा | पाटलिपुत्र | भोगाली पुत्ततिस | अशोक |
| चौथी | कश्मीर | वसुमित्र | कनिष्क |

- **त्रिपिटक:** विनयपिटक में भिक्षुओं और भिक्षुणियों के मठवासी जीवन पर लागू होने वाले आचरण और अनुशासन के नियम शामिल हैं।
- सुत्तपिटक में बुद्ध के मुख्य शिक्षण या धम्म शामिल हैं। इसे पाँच निकायों या संग्रहों में विभाजित किया गया है :
  - दीर्घ निकाय
  - मज्जिम निकाय
  - संयुक्त निकाय
  - अंगुत्तार निकाय
  - खुद्दक निकाय
- अभिधम्म पिटक भिक्षुओं के शिक्षण और विद्वतापूर्ण गतिविधियों का एक दार्शनिक विश्लेषण और व्यवस्थितकरण है।

## 6. मगध का उदय

- छठी शताब्दी ईसा पूर्व से भारत का राजनीतिक इतिहास वर्चस्व के लिए चार राज्यों–मगध, कोशल, वत्स और अवंती के बीच संघर्ष का इतिहास है।
- मगध साम्राज्य अंततः सबसे शक्तिशाली साबित हुआ और एक साम्राज्य स्थापित करने में सफल रहा।

- **हर्यंक वंश (544 ईसा पूर्व–412 ईसा पूर्व):**
  - **बिम्बिसार/श्रोणिक (544 ईसा पूर्व–492 ईसा पूर्व):** वह हर्यंक वंश के संस्थापक थे। बिंबिसार के निर्देशन में मगध का उत्थान हुआ।
  - वह उसी समय रहते थे जब गौतम बुद्ध थे। बिम्बसार ने अपनी विस्तारवादी नीति को आगे बढ़ाने के लिए, उन्होंने कोशल (कोसलदेवी/महाकोसला/कोशल सम्राट प्रसेनजीत की बहन), लिच्छवी (लिच्छवी प्रमुख चेतक की बहन चेल्लाना) और मद्र (मद्र सम्राट की पुत्री खेमा) की राजकुमारियों से विवाह किया।
  - कोशल के राजा प्रसेनजित की बहन से विवाह के बदले में उन्हें दहेज के रूप में काशी का एक हिस्सा प्राप्त हुआ।
  - उसने अंग पर विजय प्राप्त की। जब अवंती राजा प्रद्योत पीलिया से बीमार हो गए, तो उन्होंने अपने राज वेद जीवक को उज्जैन भेजा।
  - उसे श्रोणिक के नाम से जाना जाता था। वह पहला भारतीय राजा था जिसके पास एक नियमित और स्थायी सेना थी।
  - उन्होंने न्यू राजगृह शहर का निर्माण किया।
  - **अजातशत्रु/कुणिका (492 ईसा पूर्व – 460 ईसा पूर्व):** बिम्बिसार के बाद उसका पुत्र अजातशत्रु गद्दी पर बैठा। अपने पिता की हत्या करने के बाद अजातशत्रु सिंहासन पर बैठा।
  - अजातशत्रु ने अधिक मुखर दृष्टिकोण अपनाया। उसने अपने मामा, कोशल के राजा प्रसेनजित पर हमला करके, काशी पर पूर्ण अधिकार कर लिया और पहले के सौहार्दपूर्ण संबंधों को तोड़ दिया।
  - अजातशत्रु के आक्रमण का अगला लक्ष्य वज्जि महासंघ था। परंपरा के अनुसार, यह संघर्ष 16 वर्षों तक चला, और वज्जि लोगों के बीच असंतोष के बीज फैलाकर, वह वज्जी को जीतने में सक्षम होने का एकमात्र तरीका था।
  - वज्जि को पराजित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली तीन चीजें– (i) सुनिधा और वत्सकार–अजातशत्रु के कूटनीतिक मंत्री थे, जिन्होंने वज्जियों के बीच कलह के बीज बोए, (ii) रथमुसल– एक प्रकार का रथ जिसमें एक गदा जुड़ी हुई थी (iii) महाशिला कंटक युद्ध में बड़े–बड़े पत्थरों को फेंकने वाले यंत्र का प्रयोग किया था।
  - काशी और वैशाली (वज्जी की राजधानी) को प्राप्त करके, मगध गंगा घाटी में प्रमुख क्षेत्रीय बल बन गया।
  - उसने गंगा के तट पर पाताली गाँव में राजगृह किला और जलदुर्ग (प्रहरीदुर्ग) का निर्माण किया।
  - **उदयिन (460 ईसा पूर्व–440 ईसा पूर्व):** अजातशत्रु का उत्तराधिकारी उसका पुत्र उदयिन था। उनका शासनकाल महत्वपूर्ण है क्योंकि उसने अपने पिता अज्ञातशत्रु की हत्या कर सत्ता प्राप्त की थी तथा उसने राजधानी को राजगृह से पाटलिपुत्र स्थानांतरित किया और सोन और गंगा नदियों के मिलन बिंदु पर पाटलिपुत्र शहर का निर्माण किया। उसके बाद उसके उत्तराधिकारी, नागदशक इस वंश का अन्तिम शासक था। मुंडा और नाग–दाश, जिनमें से सभी नेतृत्व करने में असमर्थ थे।
- **शिशुनाग वंश (412 ईसा पूर्व–344 ईसा पूर्व):** नाग–दाशक शासन करने के योग्य नहीं था। इसलिए लोग निराश हो गए और शिशुनाग को अंतिम राजा का मंत्री था राजा के रूप में चुना। शिशुनाग की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि अवंती के प्रद्योत वंश का विनाश थी। परिणामस्वरूप, मगध और अवंती के बीच 100 वर्षों तक चले संघर्ष को रोक दिया गया। अवंती को बाद में मगध वंश में शामिल कर लिया गया।
- कालाशोक (काकवर्ण) को शिशुनाग का उत्तराधिकारी बनाया गया। उसका शासनकाल महत्वपूर्ण था क्योंकि वैशाली (383 ई.पू.) में उसने द्वितीय बौद्ध संगीति का आह्वान किया था।
- **नंद वंश (344 ईसा पूर्व–323 ईसा पूर्व):** महापद्म ने शिशुनाग वंश को उखाड़ फेंका और राजाओं की एक नई पंक्ति नंदों की स्थापना की। महापद्म को पुराणों और पालि दोनों लेखों में उग्रसेन, या एक महान सेना के मालिक, और सर्वक्षत्रांतक, या सभी क्षत्रियों के उन्मूलनकर्ता के रूप में संदर्भित किया गया है।
- महापद्म को पुराणों में एकराए अकेला राजा कहा गया है। शिशुंग काल के दौरान शासन करने वाले सभी राजवंशों को उसके द्वारा उखाड़ फेंका गया प्रतीत होता है। उन्हें अक्सर ''भारत का पहला साम्राज्य निर्माता" कहा जाता है।
- महापद्म के उत्तराधिकारी उसके आठ पुत्र बने। अंतिम धनानंद था। ग्रीक लेखन का अग्रम या एक्संद्रामेस और अंतिम राजा धनानंद एक ही व्यक्ति हो सकते हैं। सिकंदर ने धनानंद के शासन के दौरान 326 ईसा पूर्व में उत्तर–पश्चिम भारत पर आक्रमण किया।
- ग्रीक लेखक कर्टियस ने दावा किया कि धनानंद एक बड़ी सेना का प्रभारी था जिसमें 3,000 हाथी, 2,000 रथ, 20,000 घुड़सवार और 200,000 सैनिक शामिल थे। धनानंद की ताकत से सिकंदर का गंगा की घाटी में अभियान रुक गया था, जिसने सिकंदर को भी आतंकित कर दिया था।
- लगभग 322–21 ईसा पूर्व, नंद वंश का अंत हो गया और चंद्रगुप्त मौर्य ने मौर्य वंश की स्थापना की।
- **विदेशी आक्रमण:**
  - ईरानी आक्रमण– डेरियस का आक्रमण (518 ईसा पूर्व)
  - मैसेडोनियन आक्रमण–सिंकदर अलेक्जेंडर का आक्रमण (326 ईसा पूर्व)
- 326 ईसा पूर्व में, सिकंदर ने भारत पर आक्रमण किया, सिंधु नदी को पार करने के बाद वह तक्षशिला की ओर बढ़ा। उसने फिर झेलम और चिनाब नदियों के बीच राज्य के भारतीय राजा पोरस को चुनौती दी।
- भीषण युद्ध (हाइडेस्पीज की लड़ाई) में भारतीयों की हार हुई। सिकंदर ने पोरस को बंदी बना लिया और अन्य स्थानीय शासकों की तरह, जिन्हें उसने हराया था, उसे अपने क्षेत्र पर शासन जारी रखने की अनुमति दी।
- सिकंदर 19 महीने (326–325 ईसा पूर्व) तक भारत में रहा, जो लड़ाई से भरा हुआ था जुलाई 325 ईसा पूर्व सिकंदर और उसकी सेना घर के लिए पश्चिम की ओर लौट आई। वह 323 ईसा पूर्व में बाबुल पहुंचा और 33 वर्ष की आयु में उसकी मृत्यु हो गई।

## 7. मौर्य काल (322 ईसा पूर्व–185 ईसा पूर्व)

- **राजधानी:** पाटलिपुत्र (वर्तमान पटना, बिहार)
- **सरकार:** राजतंत्र
- **ऐतिहासिक युग:** सी। 322 ईसा पूर्व (बीसीई) 187 ईसा पूर्व (बीसीई)
- **महत्वपूर्ण राजा:** चंद्रगुप्त, बिन्दुसार, अशोक
- **मौर्य शासक**

- **चंद्रगुप्त मौर्य:** मौर्य साम्राज्य भारत का पहला सबसे बड़ा साम्राज्य था। चन्द्रगुप्त मौर्य ने मगध में साम्राज्य की स्थापना की।
- विष्णुगुप्त, जिन्हें बाद में चाणक्य या कौटिल्य के नाम से जाना गया, नंद राजा से अपमानित हुए थे। नदों को समूल नष्ट करने की कसम खाई। चंद्रगुप्त, शायद मैसेडोनिया के सिकंदर से प्रेरित होकर, एक सेना खड़ी कर रहा था और अपना खुद का राज्य स्थापित करने के अवसरों की तलाश कर रहा था।
- सिकन्दर की मृत्यु का समाचार सुनकर चन्द्रगुप्त ने लोगों को इकट्ठा किया और उनकी सहायता से यूनानी सेना को खदेड़ दिया जिसे सिकन्दर ने तक्षशिला में छोड़ा था। फिर उन्होंने और उनके सहयोगियों ने पाटलिपुत्र की ओर कूच किया और 322 ईसा पूर्व (बीसीई) में नंद राजा को हराया। इस प्रकार मौर्य वंश की स्थापना हुई।
- **बिन्दुसार :** उनका वास्तविक नाम सिहासेना था। वह चंद्रगुप्त मौर्य के पुत्र था। ग्रीक विद्वानों द्वारा उसे अमित्रोचेट्स (दुश्मनों का नाश करने वाला) के रूप में उल्लेखित किया है, जबकि महाभाष्य उन्हें अमित्रघात (शत्रुनाशक) के रूप में संदर्भित करता है।
- बिंदुसार स्पष्ट रूप से एक सक्षम शासक था जिससे पश्चिम एशिया के ग्रीक राज्यों के साथ घनिष्ठ संपर्क की अपने पिता की परंपरा को जारी रखा। ऐसा माना जाता है कि उसने दो समुद्रों यानी अरब सागर और बंगाल की खाड़ी के बीच की भूमि पर विजय प्राप्त की थी। उन्हें चाणक्य और अन्य सक्षम मंत्रियों द्वारा सलाह दी जाती रही। ऐसा माना जाता है कि बिंदुसार अजीविका संप्रदाय में दीसित हो गया था।
- उसने अपने पुत्रों को साम्राज्य के विभिन्न प्रांतों के वाइसराय के रूप में नियुक्त किया था। बिन्दुसार ने 25 वर्षों तक शासन किया, और उनकी मृत्यु 272 ईसा पूर्व में हुई थी। अशोक बिन्दुसार चुना हुआ उत्तराधिकारी नहीं था, और तथ्य यह है कि वह केवल चार साल बाद 268 ईसा पूर्व में सिंहासन पर आ रहा हुआ था, यह दर्शाता है कि उत्तराधिकार के लिए बिन्दुसार के पुत्रों के बीच संघर्ष हुआ होगा।
- अपने शासन के दौरान, बिन्दुसार कर्नाटक तक मौर्य साम्राज्य का विस्तार करने में सफल रहा। उसकी मृत्यु के समय, उपमहाद्वीप का एक बड़ा हिस्सा मौर्य आधिपत्य के अधीन आ गया था। उसने अपने पुत्र अशोक को उज्जैन का राज्यपाल नियुक्त किया। उसकी मृत्यु के बाद, अशोक मगध के सिंहासन पर बैठा।
- **अशोक:** अशोक, चौथी शताब्दी ई.पू. में अपने दादा चंद्रगुप्त मौर्य द्वारा स्थापित साम्राज्य के सबसे महान और शासकों में से एक थे। उन्हें राधागुप्त नामक एक बुद्धिमान व्यक्ति (प्रधानमंत्री) का समर्थन प्राप्त था।
- चाणक्य के कई विचार अर्थशास्त्र नामक पुस्तक में लिखे गए हैं। अशोक पहला शासक था जिसने शिलालेखों के माध्यम से अपना संदेश लोगों तक पहुंचाने का प्रयास किया। ये शिलालेख प्राकृत भाषा में थे और ब्राह्मी लिपि में लिखे गए थे।
- उन्हें श्देवनाम प्रिय' के रूप में जाना जाता था जिसका अर्थ है 'देवताओं का प्रिय'। कलिंग कलिंग तटीय उड़ीसा का प्राचीन नाम था। अशोक ने 261 ईसा पूर्व में कलिंग पर विजय प्राप्त करने के लिए युद्ध लड़ा था। जब उसने हिंसा और रक्तपात देखा तो वह द्रवित हो गया और इसलिए उसने और युद्ध न करने का निर्णय लिया।
- अशोक के शासन की परिभाषित घटना उसके शासनकाल के आठवें वर्ष में कलिंग (वर्तमान ओडिशा) के खिलाफ उसका अभियान था। यह मौर्यो का एकमात्र दर्ज सैन्य अभियान था।
- युद्ध में मारे गए और निर्वासित किये गये, लोगों की संख्या हजारों में थी।
- अभियान शायद सामान्य से अधिक क्रूर था क्योंकि यह कलिंग के खिलाफ एक दंडात्मक कार्यवाही थी, जो सम्भवतः बिन्दुसार के समय में मगध साम्राज्य से अलग हो गया था (हाथीगुम्फा शिलालेख कलिंग को नंद साम्राज्य के एक हिस्से के रूप में बताता है)।
- अशोक नरसंहार से इतना तबाह हो गया था और पीड़ा से हिल गया था कि जिसने उसके दृष्टिकोण और मूल्यों को बदल दिया।
- अशोक अपने आध्यात्मिक गुरु उपगुप्त से बेहद प्रभावित थे उन्हीं के प्रभाव में आकर वह बौद्ध बन गए और उनके नए-नए मूल्यों और विश्वासों की एक परम्परा को अपना लिया, जो शांति और नैतिक धार्मिकता या धम्म (संस्कृत में धर्म) के लिए उनके जुनून की पुष्टि करते हैं।
- **अशोक के शिलालेख:** जेम्स प्रिंसेप, एक ब्रिटिश तत्वशास्त्री और औपनिवेशिक प्रशासक अशोक के शिलालेखों को समझने वाले पहले व्यक्ति थे। अशोक के ये अभिलेख बौद्ध धर्म के प्रथम मूर्त प्रमाण हैं।
- **प्रमुख शिलालेख:**
- **चंद्रशोक (अशोक, दुष्ट) से धर्मसोका (अशोक धर्मी):** कलिंग की लड़ाई के बाद, उपगुप्त के प्रभाव में आकर अशोक बौद्ध बन गया। उसने धम्म की नीति पर लोगों को निर्देश देते हुए देश के विभिन्न भागों में दौरे (धर्मसूत्र) किए।
- **अशोक का धम्म:** 'धम्म' संस्कृत शब्द :धर्म' के लिए प्राकृत शब्द है। अशोक के स्तंभ शिलालेख II में धम्म का अर्थ समझाया गया है। धम्म में किसी देवता की पूजा, या यज्ञ का प्रदर्शन शामिल नहीं था। अशोक अपना कर्तव्य समझता था कि वह अपनी प्रजा को निर्देश दे और वह बुद्ध की शिक्षाओं का प्रसार करे।
- अशोक के धम्म में मानवतावाद के महानतम विचार निहित थे, जो सभी धर्मों का सार था। उन्होंने करुणा, दान, पवित्रता, साधुता, संयम, सत्यवादिता, आज्ञाकारिता और माता–पिता, गुरुओं और बड़ों के प्रति सम्मान पर जोर दिया।
- जो भिक्षु धम्म के बारे में पढ़ाने के लिए जगह–जगह जाते थे। उन्हें धम्म महामात्त कहा जाता था। अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए अपने पुत्र महिंद और पुत्री संघमित्रा को श्रीलंका भेजा था। अशोक ने धम्म के संदेश को फैलाने के लिए धम्ममहाभात्त को पश्चिम एशिया, मिस्र और पूर्वी यूरोप में भी भेजा।
- अशोक ने बौद्ध धर्म में आस्था प्रकट करते हुए अपनी राजधानी पाटलिपुत्र में तीसरी बौद्ध संगीति का आयोजन करवाया था।

### क्या आप जानते हैं?

- **अशोक का सिंह शीर्ष:** भारतीय गणराज्य का प्रतीक सारनाथ में स्थित अशोक के स्तंभों में से एक के सिंह शीर्ष से अपनाया गया है। वृत्ताकार आधार से निकला पहिया, अशोक चक्र राष्ट्रीय ध्वज का एक भाग है।

| प्रांतों का नाम | राजधानी का नाम |
|---|---|
| उत्तरापथ (उत्तरी) | तक्षशिला |
| अवंती राष्ट्र (पश्चिमी) | उज्जैन |
| प्राची (पूर्वी और मध्य) | पाटलिपुत्र |
| कलिंग (पूर्वी) | तोशाली |
| दक्षिणापथ (दक्षिणी) | सुवर्णगिरी |

## 8. मौर्योत्तर भारत

- मौर्य साम्राज्य के पतन के बाद उत्तर–पश्चिम से शक, सीथियन, पार्थियन, इंडो–यूनानी या बैक्ट्रियन यूनानियों और कुषाणों के आक्रमण हुए। अशोक की मृत्यु के बाद दक्षिण में सातवाहन स्वतंत्र हो गए। गुप्त वंश के उदय से पहले उत्तर में शुंग और कण्व थे। चेदि (कलिंग) ने भी अपनी स्वतंत्रता की घोषणा कर दी थी ।
- यहाँ यह ध्यान रखना होगा कि पश्चातवर्ती समय में मगध भले ही भारत का प्रमुख राज्य नहीं रहा, लेकिन यह बौद्ध संस्कृति का एक बड़ा केंद्र बना रहा।
- **मौर्योत्तर इतिहास के स्रोत:**
  - **पुरातात्विक स्रोत:**
    - **शिलालेख**
      - दाना देव का अयोध्या शिलालेख
      - पर्सेपोलिस, नक्श–ए रुस्तम शिलालेख
      - मोगा (तक्षशिला ताम्रपत्र लेख)
      - जूनागढ़/गिरनार शिलालेख
      - नासिक प्रशस्ति
      - डेरियस I का शिलालेख
    - **सिक्के:**
      - सातवाहनों के सिक्के
      - कडफिसेस II के सिक्के
      - रोमन सिक्के
  - **साहित्यिक स्रोत:**
    - पुराणा
    - गार्गी संहिता
    - बाणभट्ट की हर्षचरित
    - पतंजलि की महाभाष्य
    - गुणाढ्य की बृहत्कथा
    - नागार्जुन की मध्यमिका सूत्र
    - अश्वघोष की बुद्धचरित
    - कालिदास की मालविकाग्निमित्रम्
  - **विदेशी स्रोत:**
    - ह्वेन त्सांग, चीनी बौद्ध भिक्षु और यात्री
- **उत्तर में शुंग:** अंतिम मौर्य सम्राट, बृहद्रथ की हत्या उनके ही सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने कर दी थी, जिसने मगध में अपने शुंग वंश की स्थापना की थी। पुष्यमित्र ने पाटलिपुत्र को अपनी राजधानी बनाया। इसकी दूसरी राजधानी अवन्ति थी।
- शुंग वंश के महत्वपूर्ण शासक थे:
  - पुष्यमित्र शुंग (185–148 ईसा पूर्व)
  - अग्निमित्र (148–141 ईसा पूर्व)
  - भागवत (114 – 82 ईसा पूर्व)
  - देवभूति (82–72 ईसा पूर्व)
- **उत्तर में कण्व:** कण्व वंश ने चार राजा हुए और उनका शासन केवल 45 वर्षों तक चला। कण्वों के पतन के बाद मगध का इतिहास गुप्त वंश के उदय तक किसी भी महत्व से रहित है। कण्व वंश के महत्वपूर्ण शासक थे–
  - वासुदेव
  - भूमि मित्र
  - नारायण
  - सुसरमन
- **दक्षिण में सातवाहन:** उत्तर में कुषाण और दक्षिण में सातवाहन (आंध्र) क्रमशः लगभग 300 वर्ष और 450 वर्ष तक फलते–फूलते रहे। कहा जाता है कि सातवाहन वंश के संस्थापक सिमुक ने तेईस वर्षों तक शासन किया था।
- **इंडो–ग्रीक, इंडो–पार्थियन, शक और कुषाण**
  - **इंडो–ग्रीक और इंडो–पार्थियन:** उत्तर–पश्चिमी भारत और पंजाब क्षेत्र की विजय के बाद, सिकंदर महान ने प्रांतीय गवर्नरों के अधीन विजित क्षेत्रों को छोड़ दिया। इसके दो पूर्वी क्षत्रपों, बैक्ट्रिया और पार्थिया ने अपने ग्रीक गवर्नरों के अधीन विद्रोह किया और अपनी स्वतंत्रता की घोषणा कर दी।
  - बैक्ट्रिया का क्षत्रप डायोडोटस और पार्थिया को अर्सेस स्वतंत्र हो गये। मौर्य साम्राज्य के पतन के बाद, बैक्ट्रिया और पार्थिया के यूनानी शासकों ने भारत की उत्तर–पश्चिमी सीमा भूमि में अतिक्रमण करना शुरू कर दिया।
  - भारत की पश्चिमी सीमा पर बसने वाले बैक्ट्रियन और पार्थियन धीरे–धीरे अंतर–विवाहित और स्वदेशी आबादी के साथ मिश्रित हो गए। इसने भारत के उत्तर–पश्चिमी भाग के साथ इंडो–ग्रीक और इंडोपार्थियन उपनिवेशों की स्थापना की।
  - **इंडो–यूनानियों का योगदान:**
    - **सिक्का निर्माण:** इंडो–ग्रीक शासकों ने एक नई मुद्रा प्रणाली की शुरुआत की और उन पर शिलालेख, प्रतीकों और उत्कीर्ण आंकड़ों के साथ उचित आकार के सिक्कों का निर्माण किया। भारतीयों ने यह कला यूनानियों से ही सीखी थी।
    - **मूर्तिकला:** भारतीय कला का गांधार स्कूल ग्रीक प्रभाव का बहुत ऋणी है। यूनानी अच्छे गुफा निर्माता थे। महायान बौद्धों ने उनसे गुफाओं को तराशने की कला सीखी और रॉक–कट वास्तुकला में कुशल हो गए।
  - **शक:** भारत में इंडो–ग्रीक शासन को शकों ने समाप्त कर दिया था। खानाबदोशों के रूप में शक बड़ी संख्या में आए और पूरे उत्तरी और पश्चिमी भारत में बस गए।
  - शक सीथियन, खानाबदोश प्राचीन ईरानी थे, और संस्कृत में शक के रूप में जाने जाते थे। शक शासन की स्थापना गांधार क्षेत्र में माओ या मोगैन ने की थी और उसकी राजधानी 'सिरकाप' थी।

मोरा (मथुरा) शिलालेख में उसके नाम का उल्लेख है। उसके सिक्कों पर बुद्ध और शिव के चित्र अंकित हैं।

- रुद्रदामन शकों का सबसे महत्वपूर्ण और प्रसिद्ध राजा था। उनका जूनागढ़/गिरनार शिलालेख शुद्ध संस्कृत में पहला शिलालेख था। भारत में, शकों को भारतीय समाज में आत्मसात कर लिया गया था। उन्होंने भारतीय नामों को अपनाना शुरू किया और भारतीय धार्मिक मान्यताओं का पालन किया।
- शकों ने क्षत्रपों अपने लोगों को अपने क्षेत्रों का प्रशासन करने के लिए प्रांतीय राज्यपालों के रूप में नियुक्त किया।
- **पार्थियन:** पार्थियन ईरानी मूल के थे और शकों के साथ मजबूत सांस्कृतिक संबंध के कारण, इन समूहों को भारतीय स्रोतों में शक–पहलव के रूप में संदर्भित किया गया था।
- शकों और पार्थियनों का शासन उत्तर पश्चिमी और उत्तरी भारत के विभिन्न हिस्सों में एक साथ था। उन्होंने क्षत्रपों (राज्यपालों) और महाक्षत्रपों (अधीनस्थ शासकों) के माध्यम से शासन किया।
- पाकिस्तान के उत्तर–पश्चिमी क्षेत्र में पार्थियन शासन का संकेत देने वाला महत्वपूर्ण शिलालेख पेशावर के पास मर्दन से प्राप्त प्रसिद्ध तख्त–ए–बही शिलालेख है।
- शिलालेख, दिनांकित 45 ईस्वी में, पार्थियन शासक के रूप में गोंडोफर्नेस या गोंडोफेरेस को संदर्भित करता है। कुछ साहित्यिक स्रोत उन्हें सेंट थॉमस के साथ जोड़ते हैं, सेंट के बारे में कहा जाता है कि उन्होंने राजा और उनके भाई दोनों को ईसाई धर्म में परिवर्तित कर दिया था।
- **कुषाण:** कुषाणों ने यूह–ची जनजातियों के एक वर्ग का गठन किया, जो सुदूर अतीत में उत्तर–पश्चिमी चीन में बसे हुए थे। पहली शताब्दी ईसा पूर्व में, ची जनजातियाँ पाँच प्रमुख वर्गों से बनी थीं, जिनमें से कुषाणों ने दूसरों पर राजनीतिक प्रभुत्व प्राप्त किया।
- ईसाई युग की शुरुआत तक, सभी यू–ची जनजातियों ने कुषाणों के वर्चस्व को स्वीकार कर लिया थाय उन्होंने अपनी खानाबदोश आदतों को त्याग दिया और भारत की उत्तर–पश्चिमी सीमा से सटे बैक्ट्रियन और पार्थियन भूमि में बस गए थे।
- कुषाणों ने बैक्ट्रिया और पार्थिया पर अधिकार कर लिया और धीरे–धीरे खुद को उत्तरी भारत में स्थापित कर लिया। उनकी एकाग्रता ज्यादातर पंजाब, राजपूताना और काठियावाड़ में थी। कुषाण शासक बौद्ध थे। तक्षशिला और मथुरा बौद्ध शिक्षा के महान केंद्र बने रहे, चीन जो पश्चिमी एशिया के छात्रों को आकर्षित करते रहे।
- कनिष्क सभी कुषाण सम्राटों में सबसे महान था। उन्होंने 78 ईस्वी में संप्रभुता ग्रहण की और एक नए युग की नींव रखते हुए अपने शासन की घोषणा की, जो बाद में शक युग बन गया। कुषाणों की राजधानी प्रारंभ में काबुल थी। बाद में, इसे पेशावर या पुरुषपुर में स्थानांतरित कर दिया गया। कुषाणों की दूसरी राजधानी मथुरा थी।

## 9. संगम युग

- 'संगम' शब्द मदुरै में पांड्य राजाओं के शाही संरक्षण के तहत फले–फूले कवियों के संघ को संदर्भित करता है। इन कवियों द्वारा रचित कविताओं को सामूहिक रूप से संगम साहित्य के रूप में जाना जाता है। जिस काल में इन कविताओं की रचना हुई उसे संगम युग कहा जाता है।
  - **समय अवधि:** तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व (बीसीई) से सी। तीसरी शताब्दी ईस्वी (सीई) तक।
  - **तमिझगम:** उत्तर में वेंगदम (तिरुपति पहाड़ी) से दक्षिण में कन्याकुमारी (केप कोमोरिन) तक, पूर्व और पश्चिम में समुद्र से घिरा हुआ है।
  - **आयु:** लौह युग
  - **संस्कृति:** मेगालिथिक
  - **राजनीति:** राजतंत्र
  - **राजवंशों ने शासन किया:** चेर, चोल और पांड्य
- **स्रोत:**
  - **शिलालेख:** कलिंग के राजा खारवेल का हाथीगुम्फा शिलालेख, पुगलुर (करूर के पास) शिलालेख, अशोकन शिलालेख II और XIII, और मंगुलम, अलगर्मलाई और कीलावलु (सभी मदुरै के पास) में पाए गए शिलालेख हैं।
  - **तांबे की प्लेटें:** वेल्विकुडी और चिन्नमानुर से प्राप्त तांबे पत्र लेख।
  - **सिक्के:** चेरों, चोलों, पांड्यों और संगम युग के सरदारों के साथ–साथ रोमन सिक्कों द्वारा जारी किए गए सिक्के।
  - **महापाषाण स्मारक:** अंत्येष्टि और वीर पत्थर।
  - **उत्खनित सामग्री:** आदिचनल्लूर, अरिकामेडु, कोडुमनाल, पुहार, कोरकई, अलगनकुलम, उरैयूर से प्राप्त सामग्री।
  - **साहित्यिक स्रोत:** तोलकाप्पियम, एट्टुथोगई (आठ संकलन), पाथुपट्टु (दस मूर्तियाँ), पथिनेन कीज कनक्कू (अठारह काव्य कृतियों का संग्रह), पट्टिनप्पलाई और मदुरैकंजी। महाकाव्य शिलापदिकरम और मणिमेखलई।
  - **विदेशी नोटिस:** द पेरिप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी, प्लिनी का प्राकृतिक इतिहास, टॉलेमी का भूगोल, मेगस्थनीज की इंडिका, राजावली, महावंश और दीपवंश।
- संगम युग दक्षिण भारत में तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व से तीसरी शताब्दी ईस्वी तक की अवधि है। तमिल किंवदंतियों का कहना है कि प्राचीन दक्षिण भारत में मुच्छंगम नामक 3 संगम आयोजित किए गए थे। ये संगम मदुरै के पांड्य राजाओं के राजकीय संरक्षण में फले–फूले थे।
- संगम युग के दौरान तीन राजवंशों ने शासन किया – चेर, चोल और पांड्य। इन साम्राज्यों के बारे में साक्ष्य का मुख्य स्रोत संगम काल के साहित्यिक संदर्भों से रेखांकित किया गया है।

| संगम काल | वर्तमान नगर | प्राचीन राजधानी | महत्वपूर्ण शासक | महत्वपूर्ण पत्तन | राजचिन्ह |
|---|---|---|---|---|---|
| चेर | केरल | वन्जी | चेर शेनगुट्टवन | मुसिरी, तोंडी | तीर, कमान |
| चोल | तमिलनाडु | उरैयुर, पुहार | करैकल | कावेरीपट्टनम | बाघ |
| पांड्य | तमिलनाडु | मदुरै | नेंदुनचेलियन | मुजिरिस (मुचिरी), कोरकई, कावेरी | मछली |

## 10. गुप्त वंश

- गुप्त साम्राज्य की स्थापना श्री गुप्त ने की थी और उसका उत्तराधिकारी उनके पुत्र घटोत्कच था। यह राजवंश चंद्रगुप्त–प्रथम, और समुद्रगुप्त आदि जैसे शासकों के साथ प्रसिद्ध हुआ। कुछ महत्वपूर्ण गुप्त साम्राज्य के राजाओं का विवरण नीचे दिया गया है–
  - **श्री गुप्तः** गुप्त वंश के संस्थापक श्री गुप्त था। वह अपने घटोत्कच पुत्र के कारण स्वतंत्र होने में सफल हुआ था। इन दोनों को महाराज कहा जाता था।
  - **चंद्रगुप्त प्रथम (320 – 330 ईस्वी):** चंद्रगुप्त प्रथम, वह महाराजाधिराज (राजाओं के महान राजा) कहलाने वाले पहले व्यक्ति थे। उन्होंने लिच्छवियों के साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करके अपनी स्थिति मजबूत कर ली। उन्होंने उस परिवार की राजकुमारी कुमारदेवी से विवाह किया।
  - महरौली लौह स्तंभ अभिलेख में उसके व्यापक विजय अभियानों का उल्लेख है। चंद्रगुप्त प्रथम को गुप्त युग का संस्थापक माना जाता है जो 320 ईस्वी में उसके राज्यारोहण के साथ शुरू होता है।
  - **समुद्रगुप्त (330–380 ई.):** समुद्रगुप्त संभवतरू गुप्त वंश के शासकों में सबसे महान था। इलाहाबाद स्तंभ के शिलालेख समुद्रगुप्त के शासनकाल का विस्तृत विवरण प्रदान करते हैं। समुद्रगुप्त ने दक्षिण भारतीय राजाओं के खिलाफ अभियान किया था।
  - समुद्रगुप्त में अश्वमेध यज्ञ किया। समुद्रगुप्त ने सोने और चांदी के सिक्के जारी किए जिन पर 'अश्वमेध को पुनर्स्थापित करने वाले' की कथा अंकित थी। उनकी सैन्य उपलब्धियों के कारण समुद्रगुप्त को श्भारतीय नेपोलियन' के रूप में प्रतिष्ठित किया गया था।
  - **चन्द्रगुप्त द्वितीय (380–415 ई.):** समुद्रगुप्त के बाद उसका पुत्र चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य उत्तराधिकारी बना। वैवाहिक गठबंधनों के माध्यम से, चंद्रगुप्त द्वितीय ने अपनी राजनीतिक शक्ति को मजबूत किया। चंद्रगुप्त द्वितीय ने कुबेरनागा से विवाह किया, वह मध्य भारत की एक नागा वंश की राजकुमारी थीं।
  - चंद्रगुप्त द्वितीय की सबसे बड़ी सैन्य उपलब्धि पश्चिमी भारत के शक क्षत्रपों के खिलाफ उसका युद्ध था। अपनी जीत के बाद, उसने घोड़े की बलि दी और सकारी की उपाधि धारण की, जिसका अर्थ है, 'शकों का नाश करने वाला'। वह अपने को 'विक्रमादित्य' भी कहता था।
  - उज्जैन एक महत्वपूर्ण व्यापारिक नगर था और गुप्तों की वैकल्पिक राजधानी था। गुप्त साम्राज्य की महान समृद्धि विभिन्न प्रकार के सोने के सिक्कों से प्रकट होती है। चन्द्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल में प्रसिद्ध चीनी यात्री फाह्यान भारत आया था। फाहियान ने गुप्त साम्राज्य की धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक स्थिति के बारे में बहुमूल्य जानकारी दी है।
  - **कुमारगुप्तः** कुमारगुप्त चंद्रगुप्त द्वितीय का पुत्र और उत्तराधिकारी था। उसने कई सिक्के जारी किए और उसके शिलालेख पूरे गुप्त साम्राज्य में पाए गए हैं। कुमारगुप्त ने अश्वमेध यज्ञ भी किया था। कुमारगुप्त ने नालंदा विश्वविद्यालय की नींव रखी जो अंतर्राष्ट्रीय ख्याति के संस्थान के रूप में उभरा। 'पुष्यमित्र' नामक शक्तिशाली धनी जनजाति ने गुप्त सेना को उसके शासनकाल के अंत में हराया था।
  - **स्कंदगुप्तः** मध्य एशिया के हूणों की एक शाखा ने हिंदू कुश पर्वतों को पार करने और भारत पर आक्रमण करने का प्रयास किया। स्कंदगुप्त जिसने वास्तव में हूणों के आक्रमण का सामना किया था। उसने हूणों के खिलाफ विजय प्राप्त की और साम्राज्य को बचाया तथा उन्हें भारत से बाहर खदेड़ दिया।

## 11. गुप्तोत्तर काल

- गुप्तों और वाकाटक शासकों के पतन के साथ राजनीतिक स्थिति जटिल हो गई। गुप्तों के सामंत उत्तर में स्वतंत्र हो गए। दक्कन और सुदूर दक्षिण में भी स्वतंत्र हुई शक्तियों की बहुलता देखी गई।
- गुप्तों के पतन से लेकर हर्ष के उदय तक भारत में राजनीतिक परिदृश्य विस्मयकारी था। कुछ समय तक बड़े पैमाने पर लोगों का विस्थापन होता रहा। गुप्तों की विरासत के लिए छोटे–छोटे राज्यों में आपस में होड़ मच गई। उत्तरी भारत को मगध के बाद के गुप्तों, मौखरियों, पुश्य भूतियों और मैत्रकों के चार राज्यों में विभाजित किया गया था। मौखरियों ने सर्वप्रथम कन्नौज के आसपास पश्चिमी उत्तर प्रदेश के क्षेत्र पर अधिकार किया। धीरे–धीरे उन्होंने बाद के गुप्तों को पराजित कर उन्हें मालवा में स्थानांतरित कर दिया।
- **पुष्यभूति वंशः** पुष्यभूति या वर्धन वंश की स्थापना थानेसर (कुरुक्षेत्र जिला) में पुष्यभूति द्वारा संभवतः 6वीं शताब्दी की शुरुआत में की गई थी। पुष्यभूति गुप्तों के सामंत थे, लेकिन हूणों के आक्रमणों के बाद वे स्वतंत्र हो गए।
- राजवंश का पहला महत्वपूर्ण शासक प्रभाकर वर्धन (580–605 ई.) था। प्रभाकर वर्धन ने अपने सबसे बड़े पुत्र राज्यवर्धन (605–606 ईस्वी) को उत्तराधिकारी बनाया गया था, राज्यवर्धन को 606 ईस्वी में शशांक द्वारा मार डाला गया था।
- हर्षवर्धन का जन्म 590 ई. में स्थानेश्वर (थानेसर, हरियाणा) के राजा प्रभाकर वर्धन के यहाँ हुआ था। वह पुष्यभूति से संबंधित था जिसे वर्धन वंश भी कहा जाता था। वह एक हिंदू थे जिन्होंने बाद में महायान बौद्ध धर्म ग्रहण किया। उनका विवाह दुर्गावती से हुआ था।
- उनकी एक बेटी और दो बेटे थे। उनकी बेटी ने वल्लभी के मैतक वंश के एक राजा से विवाह किया था, जबकि उनके बेटों को उनके ही मंत्री ने मार डाला। चीनी बौद्ध यात्री ह्वेनसांग ने अपने लेखन में राजा हर्षवर्धन के कार्यों की प्रशंसा की।
- प्रभाकर वर्धन की मृत्यु के बाद, उनका बड़ा पुत्र राज्यवर्धन थानेसर के सिंहासन पर बैठा। हर्ष की एक बहन थी, राज्यश्री जिसका विवाह कन्नौज के राजा ग्रहवर्मन से हुआ था। गौड़ शासक शशांक ने ग्रहवर्मन को मार डाला और राज्यश्री को बंदी बना लिया।
- इस घटना ने राज्यवर्धन को शशांक के खिलाफ लड़ने के लिए प्रेरित किया। लेकिन शशांक ने राज्यवर्धन को मार डाला। इसके बाद युद्ध के मैदान में ही 16 वर्षीय हर्षवर्धन को 606 ईस्वी में थानेसर की पर बैठने का अवसर मिला। उसने अपने भाई की हत्या का बदला लेने और अपनी बहन को बचाने की कसम खाई।
- इसके लिए उसने कामरूप के राजा भास्करवर्मन के साथ संधि की। हर्ष और भास्करवर्मन ने शशांक के खिलाफ अभियान किया। अंततः शशांक बंगाल भाग गया और हर्ष कन्नौज का भी राजा बना।

- **हर्ष का साम्राज्य:** कन्नौज को प्राप्त करने पर, हर्ष ने थानेसर और कन्नौज दो राज्यों को एकजुट किया। वह अपनी राजधानी कन्नौज ले गया। गुप्तों के पतन के बाद उत्तर भारत कई छोटे–छोटे राज्यों में बंट गया था। परन्तु हर्ष अपने नेतृत्व में उनमें से कई को एकजुट करने में सफल रहा।
- पंजाब और मध्य भारत पर उसका अधिकार था। शशांक की मृत्यु के बाद उसने बंगाल, बिहार और उड़ीसा पर अधिकार कर लिया। उन्होंने गुजरात के वल्लभी राजा को भी हराया। यद्यपि (हर्ष की बेटी और वल्लभी राजा ध्रुवभट्ट के बीच विवाह से वल्लभी राजा और हर्ष में समझौता हो गया और दोनों राज्यों में मित्रता हो गई।)
- हालाँकि, दक्षिण को जीतने की हर्ष की योजना अधूरी रह गई जब चालुक्य राजा, पुलकेशिन द्वितीय ने 618–619 ईस्वी में हर्ष को हराया, इसने नर्मदा नदी के रूप में हर्ष की दक्षिणी क्षेत्रीय सीमा को सीमित कर दिया।
- यहां तक कि सामंत भी हर्ष के कड़े नियंत्रण में थे। हर्ष के शासनकाल ने भारत में सामंतवाद की शुरुआत को चिह्नित किया। ह्वेन त्सांग ने हर्ष के शासनकाल में भारत का दौरा किया था। उसने राजा हर्ष और उसके साम्राज्य का बहुत अनुकूल विवरण दिया है। वह उसकी उदारता और न्याय की प्रशंसा करता है।
- हर्ष कला का महान संरक्षक था। वे स्वयं एक सिद्धहस्त लेखक था। उन्हें संस्कृत कृतियों रत्नावली, प्रियदर्शिका और नागानंद को लेखन का श्रेय दिया जाता है। बाणभट्ट उसके दरबारी कवि थे उन्होंने हर्षचरित की रचना की जिसमें हर्ष के जीवन और कार्यों का लेखा–जोखा दिया गया है।
- हर्ष ने नालंदा विश्वविद्यालय को उदारतापूर्वक दान दिया। हर्ष ने एकत्र किए गए सभी करों का एक चौथाई दान और सांस्कृतिक उद्देश्यों के लिए उपयोग किया जाता था।
- हर्ष एक सक्षम सैन्य विजेता और एक सक्षम प्रशासक था। हर्ष मुसलमानों के आक्रमण से पहले भारत में एक विशाल साम्राज्य पर शासन करने वाला अंतिम राजा था।
- **हर्ष की मृत्यु:** हर्ष की मृत्यु 41 वर्ष तक शासन करने के बाद 647 ई. में हुई। चूंकि वह बिना किसी उत्तराधिकारी के मर गया, इसलिए उसकी मृत्यु के तुरंत बाद उसका साम्राज्य बिखर गया।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- प्राचीन भारत में, व्यापारी कारवां के नेता को सार्थवाह कहा जाता था।
- चौपड़ (चौपड़ या चौसर के नाम से भी जाना जाता है) एक प्राचीन भारतीय बोर्ड गेम था।
- दिलवाड़ा जैन मंदिर अपनी असाधारण वास्तुकला और अद्भुत संगमरमर पत्थर की नक्काशी के लिए दुनिया में जाने जाने वाले बेहतरीन जैन मंदिरों में से एक है और यह माउंट आबू में स्थित है।
- सुल्तानगंज (बिहार में भागलपुर के पास) में खोजी गई गौतम बुद्ध की विशाल प्रतिमा गुप्त काल (500–700 ईस्वी) की है।
- अजातशत्रु ने अपने मुख्यमंत्री 'वासकारा' को बुद्ध के पास यह पूछने के लिए भेजा कि वैशाली इतनी अजेय क्यों होनी चाहिए। इसके लिए बुद्ध ने 7 कारण बताए, जिनमें शामिल हैं।
  - उनका व्यवहार अनुशासित होता है
  - बड़ों का सम्मान
  - महिलाओं के लिए उनका सम्मान
  - वज्जी हमेशा बैठकों के लिए समय के पाबंद होते हैं
  - वे अपनी बेटियों की जबरदस्ती शादी नहीं करते हैं
  - वे अरहतों को आध्यात्मिक संरक्षण देते हैं
  - मुख्य कारण चैत्य (वेदी) था, जो शहर के अंदर था
- जनपद काल में विष शब्द का अर्थ साधारण लोग था।
- हेलियोडोरस एक इंडो–ग्रीक राजदूत था जिसे 113 ईसा पूर्व में एंटियलसीदास (तक्षशिला के इंडो–ग्रीक राजा) द्वारा राजा भागभद्र के दरबार में भेजा गया था।
- मेगथेनिस के संदर्भ मौर्य काल की सामाजिक और राजनीतिक स्थिति पर प्रकाश डालते हैं। उनके अनुसार भारतीय समाज 7 जातियों में विभाजित था जो दार्शनिक, किसान, चरवाहा, व्यापारी, योद्धा, पर्यवेक्षक और पार्षद थे।
- विंध्यशक्ति तीसरी शताब्दी में वाकाटक वंश के संस्थापक थे।
- गौतमीपुत्र सातकर्णी सातवाहन वंश के शासक थे।
- चंद्रगुप्त–I को लिच्छवियों से दहेज में पाटलिपुत्र मिला।
- गुप्त वंश के सम्राट समुद्रगुप्त (335/350 – 370/380 सीई) द्वारा जारी किए गए सोने के सिक्के में उन्हें वीणा बजाते हुए दिखाया गया है, जो कि एक भारतीय तार वाला वाद्य यंत्र है।
- भीतरगाँव मंदिर एक सीढ़ीदार ईंट की इमारत है जिसके सामने एक टे. राकोटा पैनल है। गुप्त काल के दौरान 5 वीं शताब्दी में निर्मित, यह छत और ऊंचे शिखर के साथ सबसे पुराना शेष ईंट/टेराकोटा हिंदू मंदिर है, हालांकि इसके ऊपरी कक्ष में 18 वीं शताब्दी में कुछ क्षति हुई थी।
- शरभपुरिया वंश ने 5वीं और 6वीं शताब्दी के दौरान भारत में वर्तमान छत्तीसगढ़ और ओडिशा के कुछ हिस्सों पर शासन किया।
- बायलाकुप्पे मठ, जिसे नामद्रोलिंग निंगमापा मठ या स्वर्ण मंदिर के नाम से जाना जाता है, मैसूर, कर्नाटक में स्थित है।
- दिद्दा, जिसे द कैथरीन ऑफ कश्मीर के नाम से भी जाना जाता है, 980 CE से 1003 CE तक कश्मीर की शासक थी।
- आदिचनल्लूर भारत के तमिलनाडु में थूथुकुडी जिले में एक पुरातात्विक स्थल है।

## महत्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न

**1.** निम्नलिखित में से कौन–सी पुस्तक महान विद्वान भवभूति द्वारा नहीं लिखी गई है?
(A) महावीरचरित
(B) मालतीमाधव
(C) उत्तरमचरित
(D) रामचरितम्

**2.** सिंधु घाटी सभ्यता का सबसे उत्तरी स्थल कौन–सा है?
(A) राखीगढ़ी (B) कालीबंगा
(C) लोथल (D) मांडा

**3.** निम्नलिखित हड़प्पा सभ्यता स्थलों में से कौन-सा स्थल सीढ़ीदार दीर्घाओं के साथ एक बड़े खुले मैदान, जिसे 'स्टेडियम के रूप में पहचाना गया, की उपस्थिति के प्रमाण दर्शाता है?
(A) मोहनजोदड़ो (B) कालीबंगा
(C) धोलावीरा (D) चुहन्दड़ो

**4.** प्राचीन भारत में व्यापारी काफिलों के नेता को... .....कहा जाता था।

(A) प्रथम कुलिका (B) महा–दंड–नायक
(C) संधि–विग्राहक (D) सार्थवाह

**5.** निम्नलिखित में से किसे दर्शन की 'सांख्य' प्रणाली की स्थापना का श्रेय दिया जाता है?
(A) व्यास (B) कपिल
(C) गौतम (D) कणाद

**6.** जैन विद्वान मेरुतुंग ने किस वर्ष में 'प्रबंध चिंतामणि' का संकलन किया।
(A) 1304 ई. (B) 1207 ई.
(C) 1406 ई. (D) 1608 ई.

**7.** पार्श्वनाथ ..... जैन तीर्थंकर थे।
(A) दसवें (B) तेईसवें
(C) चौबीसवें (D) प्रथम

**8.** जनपद काल के दौरान, 'विष' शब्द का अर्थ.. ..... होता था।
(A) साधारण लोग
(B) दुश्मन
(C) शाही अधिकारी
(D) पुजारी

**9.** सिकंदर की मृत्यु के बाद चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा पराजित हुए सिकंदर के सेनापति का नाम क्या था?
(A) टॉलेमी (B) सेल्यूकस निकेटर
(C) एंटीगोनस (D) कैसेंडर

**10.** मेगस्थनीज के अनुसार, चंद्रगुप्त मौर्य के शासन काल में समाज ..... जातियों में विभाजित था।
(A) 6 (B) 4
(C) 5 (D) 7

**11.** मौर्य साम्राज्य के पूर्वी भारतीय प्रांत की राजधानी ..... में थी।
(A) सुवर्णगिरी (B) तक्षशिला
(C) तोसलि (D) उज्जैन

**12.** गौतमी पुत्र शातकर्णी, निम्नलिखित में से किस राजवंश का शासक था?
(A) पल्लव (B) चालुक्य
(C) शक (D) सातवाहन

**13.** चंद्रगुप्त प्रथम को निम्नलिखित में से कौन–सी नगरी लिच्छवियों से दहेज के रूप में प्राप्त हुई थी ?
(A) मगध (B) पाटलिपुत्र
(C) उज्जैन (D) प्रयाग

**14.** महाराजाधिराज की उपाधि धारण करने वाला गुप्त वंश का पहला शासक कौन था?
(A) स्कंदगुप्त (B) समुद्रगुप्त
(C) रामगुप्त (D) चन्द्रगुप्त प्रथम

**15.** 'सिद्धान्त शिरोमणि' नामक प्राचीन ग्रंथ निम्नलिखित में से किसने लिखा है?
(A) ब्रह्मगुप्त (B) आर्यभट्ट
(C) भास्कराचार्य (D) महावीराचार्य

**16.** भारत के निम्नलिखित क्षेत्रों में से किस क्षेत्र में 10वीं शताब्दी के अंत में दिद्दा नामक महिला शासक का शासन था?
(A) बंगा (B) आंध्र
(C) कलिंग (D) कश्मीर

**17.** .....10 मंडलों में विभाजित 1,028 ऋचाओं का संग्रह है।
(A) यजुर्वेद (B) अथर्ववेद
(C) ऋग्वेद (D) सामवेद

**18.** भारतीय का नाम जो मोहनजोदड़ो की खोज के साथ जुड़ा था–
(A) आर. डी. बनर्जी
(B) आर. डी. चटर्जी
(C) डब्ल्यू. सी. बनर्जी
(D) एस. एन. बनर्जी

**19.** सिंधु–सभ्यता का प्राचीन बंदरगाह कौन–सा था?
(A) हड़प्पा
(B) लोथल
(C) धोलावीरा
(D) सुरकोटड़ा

**20.** वेदों की कुल संख्या है–
(A) चार (B) सात
(C) पाँच (D) तीन

**21.** दिगंबर और श्वेतांबर इनमें से किस भारतीय धर्म की उप–परंपराएँ हैं?
(A) जैन धर्म (B) बुद्ध धर्म
(C) हिन्दू धर्म (D) सिख धर्म

**22.** निम्नलिखित में से किस महाजनपद की राजधानी वैशाली थी?
(A) अवंती (B) मगध
(C) वज्जी (D) पंचाल

**23.** मेगस्थनीज एक राजदूत था जिसे पश्चिम एशिया के यूनानी शासक सेल्यूकस निकेटर ने किस भारतीय शासक के दरबार में भेजा था ?
(A) राजाराजा चोल
(B) अशोक
(C) चन्द्रगुप्त
(D) बिन्दुसार

**24.** कुषाण काल में सबसे बड़ा विकास किस क्षेत्र में हुआ था?
(A) साहित्य (B) औषधि
(C) कला (D) धर्म

## उत्तरमाला

**1.** (D) **2.** (D) **3.** (C) **4.** (D) **5.** (B)
**6.** (A) **7.** (B) **8.** (A) **9.** (B) **10.**(D)
**11.**(C) **12.**(D) **13.**(B) **14.**(D) **15.**(C)
**16.**(D) **17.**(C) **18.**(A) **19.**(B) **20.**(A)
**21.**(A) **22.**(C) **23.**(C) **24.**(C)

❐❐